चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

खण्ड VIII (1996) अंक 5, व 6

हे परमात्मा हमारे अपराधों को भी वैसे ही क्षमा कीजिए जिस प्रकार हम अपने प्रति किए गए अपराधों के लिए अन्य लोगों को क्षमा करते हैं। (ईसा मसीह)

(अर्थात परमात्मा से क्षमा मांगने का अधिकारी केवल वही व्यक्ति है जो दूसरों को क्षमा करता है)

चैतन्य लहरी

चैतन्य लहरी (1996) खण्ड VIII, अंक 5, व 6

–: विषय–सूची :–

1. निर्मला 2
2. लक्ष्य 8
3. अहँ 9
4. ईसा मसीह पूजा–गणपति पुले 25.12.95 10
5. ईस्टर पूजा कलकत्ता–14.4.96 18
6. महाशिवरात्रि पूजा–मुम्बई–19.2.93 23

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजयनालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, ओल्ड राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110 060
फोन : 5710529, 5784866

'निर्मला'

18 जनवरी 1980 को राहुरी में मराठी प्रवचन का हिन्दी रूपान्तर जिसमें परमपूज्य श्री माताजी ने स्वतः पूर्ण मन्त्र स्वनाम 'निर्मला' (निः+र्म+ला) में निहित गूढ़ भाव की विशद व्याख्या की

यह हर्ष की बात है कि सब सहजयोगी एक साथ एकत्रित हुए हैं। जब हम इस भांति एकत्रित होते हैं तब परस्पर हित की अनेक बातों पर विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं और उन विषयों पर अनेक सूक्ष्म बातें एक दूसरे को बता सकते हैं। दो-एक दिन पहले मैंने स्वयं को स्वच्छ, दोष-मुक्त करने की विधि बताई थी। स्वयं आपकी माँ का नाम ही निर्मला है और इसमें अनेक शक्तियाँ हैं।

इस नाम में पहला शब्द 'निः' है जिसका अर्थ है 'नहीं'। कोई वस्तु जिसका वास्तव में अस्तित्व नहीं है किन्तु जिसका अस्तित्व प्रतीत होता है, उसे महामाया (भ्रम) कहते हैं। सम्पूर्ण विश्व इसी प्रकार है। यह दिखता है किन्तु वास्तव में नहीं है। यदि हम इसमें लिप्त हो जाते हैं तो प्रतीत होता है यही सब कुछ है। तब हमें लगता है हमारी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है, सामाजिक व पारिवारिक स्थितियाँ असन्तोषजनक हैं। हमारे चारों ओर जो कुछ भी है सब खराब है। हम किसी चीज़ से सन्तुष्ट नहीं है।

समुद्र सतह पर जल अत्यन्त गदला होता है। उसके ऊपर अनेक वस्तुएं तैरती रहती हैं। किन्तु यदि हम उसकी गहराई में जायें तो देखेंगे कि उसके भीतर कितना सौंदर्य, कितनी धन सम्पदा और कितनी शक्ति है। तब हम भूल जायेंगे कि सतह का जल मैला है।

कहने का अभिप्राय है कि हम चारों ओर जो देखते हैं वह सब माया (भ्रम) है। सर्वप्रथम आप को याद रखना चाहिए कि यह सब जो दिखता है यह कुछ नहीं है। यदि आपको 'निः' भावना अपने अन्दर प्रतिष्ठित करना है तो जब भी आपके मन में विचार आये तो कहिये यह कुछ नहीं है यह सब भ्रम है, मिथ्या है। दूसरा विचार आये तो कहिये यह कुछ नहीं है। आपको बारम्बार यह भाव लाना है। तब आप 'निः' शब्द का अर्थ समझ पायेंगे।

आपको जो कुछ माया-रूप दिखता है यह सम्पर्णूतः भ्रम मात्र नहीं है, इस दृश्यमान के परे भी कुछ है। किन्तु अपने जन्मों के इतने बहुमूल्य वर्ष हमने वृथा गंवा दिये है कि हम वे वस्तुएँ जिनका वास्तव में अस्तित्व नहीं है उनको महत्त्व देते हैं और इस भांति हमने पापों के ढेर इकट्ठे कर लिये हैं। इन सब वस्तुओं में हमने आनन्द-लाभ करने का प्रयास किया है, किन्तु वास्तव में इनमें से हमें कुछ भी आनन्द प्राप्त नहीं हुआ। तत्व रूप से ये सब कुछ नहीं है।

अतः दृष्टिकोण यह होना चाहिये कि यह सब "कुछ नहीं" है। केवल ब्रह्म ही सत्य है, अन्य सब मिथ्या है। जीवन के हर क्षेत्र में आपको यह दृष्टिकोण अपनाना है। तब आप सहजयोग को समझेंगे। साक्षात्कार के पश्चात् अनेक सहजयोगी यह सोचते हैं कि हमें सिद्धि (साक्षात्कार) प्राप्त है, हमें पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त है तो हम समृद्ध क्यों नहीं है? उन के विचार में परमात्मा का अर्थ है समृद्धि। यदि आप विचार करें कि क्या कारण है कि साक्षात्कार के पश्चात् भी आपका 'स्वभाव' नहीं बदला, तब आप देखेंगे कि आपकी आत्मा का स्वरूप नहीं बदला। देखिये, 'स्व' अर्थात् आत्मा और 'भाव' अर्थात् स्वरूप के योग से बना 'स्वभाव' शब्द कितना सुन्दर है। बताइये, क्या आपने अपनी आत्मा का स्वरूप प्राप्त कर लिया है? यदि आप 'आत्मा' में स्थित हो गये तो आप देखेंगे कि भीतर इतना सौंदर्य है कि आपको बाह्य सब कुछ नाटक सा प्रतीत होगा। जब तक आपमें यह साक्षी स्थिति जागृत नहीं होती, आपने 'निः' शब्द का अनुसरण नहीं किया, उसके अनुसार आचरण नहीं किया, जब तक कि 'निः' आपके भीतर प्रतिष्ठित नहीं हुआ है, आप भावुक, अहङ्कारी, हठी अथवा विनम्र व निराश होते रहते हैं तो इन पराकाष्ठाओं (अति की अवस्थाओं) में फंसे रहने का कारण 'निः' से सम्बन्धित है। आप न इधर न उधर, न इस स्थिति में हैं और न उस स्थिति में, अर्थात् डावाँडोल स्थिति में हैं। 'निः' स्थिति ध्यानयोग में सर्वश्रेष्ठ रूप में प्राप्त की जा सकती है। अपने जीवन में 'निः' विचार का अनुसरण करने से आप 'निर्विचार' स्थिति प्राप्त कर लेंगे।

सर्वप्रथम आपको निर्विचार होना चाहिये। जब आपके मन में कोई विचार आता है, चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा, तब विचारों का ताँता-सा लग जाता है। एक के बाद दूसरा विचार आता रहता है। कुछ लोग कहते हैं कि बुरे विचार का अच्छे विचार से प्रतिकार करना चाहिये, अर्थात् एक दिशा से आने वाली गाड़ी को जब विपरीत दिशा से आने वाली गाड़ी से धकेला जाये तो दोनों एक मध्य स्थान पर रुक जायेंगी। कहीं तक यह ठीक है किन्तु कभी-कभी यह हानिकारक भी हो सकता है। एक कुविचार जब एक सुविचार द्वारा दबाया जाता है तो यह भीतर ही भीतर दबा रहता है। किन्तु यह एकाएक उभर सकता है। अनेक व्यक्तियों के साथ ऐसा ही होता है। वे अपने सामान्य विचारों को दबा रखते हैं और अपने से कहते है हमें परोपकारी होना चाहिये, अपने आचरण अच्छे रखने चाहियें, इत्यादि। कभी-कभी ऐसे लोग बड़े उपद्रव-ग्रस्त हो सकते हैं। अचानक एकदम यह क्रोध के वशीभूत हो जाते हैं और लोग

चकित हो जाते हैं कि ये सज्जन व्यक्ति कैसे इतने क्रोध-ग्रस्त हो गये। वे अपनी निजी मानसिक शान्ति भी खो बैठते हैं। उनका सम्पूर्ण आन्तरिक सौंदर्य समाप्त हो जाता है। अत: वाञ्छनीय यही है कि हम सदैव निर्विचार रहें। अपने मस्तिक से छोटे विचारों पर काबू पायें। तब आप स्वत: ही मध्य में रहेंगे।

आपको समस्त प्रयत्न करने चाहिये। अब आप पूछेंगे, "माँ, बिना विचार किये हम काम कैसे कर सकते हैं?" अब आपके विचार क्या है? वह वास्तव में खोखले हैं। निर्विचार अवस्था में आप परमात्मा की शक्ति के साथ एकरूप हो जाते हैं अर्थात् बूँद (अर्थात् आप स्वयं) समुद्र (अर्थात् परमात्मा) में आकर मिल जाती है। तब परमात्मा की शक्ति भी आपके भीतर आ जाती है। क्या आप की अंगुली सोचती है? क्या यह फिर भी चल नहीं रही? अपने विचारों को परमात्मा को समर्पित कर दें और अपने विषय में सोचने का भार उस पर छोड़ दें। किन्तु यह कठिन-सा है क्योंकि आप निर्विचार स्थिति में नहीं है।

अनेक लोग कहते हैं हमने सब परमात्मा को समर्पण कर दिया है। किन्तु यह केवल मौखिक होता है, वास्तव में नहीं। समर्पण मौखिक क्रिया नहीं है। निर्विचारिता प्राप्त करने के लिये, जिसका अर्थ है आपका विचार करना बन्द कर देना, आपको समर्पण करना पड़ता है। जब आपकी विचार क्रिया बन्द हो जाती है तब आप मध्य में आ जाते हैं। मध्य में आते ही तुरन्त आप निर्विचार चेतना में पहुँच जाते हैं अर्थात् आप परमात्मा की शक्ति के साथ एकरूप हो जाते हैं और जब ऐसा होता है तब वह (परमात्मा) आपकी देख-रेख करता है। वह आपकी छोटी-छोटी बातों के विषय में सोचता है। यह आश्चर्यजनक है। किन्तु आप करके तो देखें और आप देखेंगे कि आपका पहला रास्ता गलत था। अत: एक बार जब आप निर्विचारिता का स्वाद लेते हैं तो आप देखते है कि आपको समस्त प्रेरणायें समस्त शक्तियाँ और अन्य सर्वस्व प्राप्त होने लगता है। निर्विचारिता में आपके मन में जो विचार आता है वह एक अन्त: स्फुरण (inspiration) होता है। आप चकित होंगे। प्रत्येक वस्तु आपके सामने ऐसे आयेगी मानो थाली में परोसकर आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दी गई। आप भाषण देने खड़े होते हैं, केवल निर्विचारिता में प्रेवश कीजिये और श्रीगणेश कर दीजिये। यद्यपि आपने पहले कभी भाषण नहीं दिया, भाषण की कला का आपको कुछ ज्ञान नहीं अथवा प्रस्तुत विषय का आपको कुछ विशेष ज्ञान नहीं किन्तु चमत्कार! आप इतना कमाल का बोलेंगे कि लोग आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि यह ज्ञान भण्डार आप में कहाँ से उमड़ पड़ा। एक बार आप निर्विचारिता में गहरे उतरे तो सब कुछ वहीं से (निर्विचारिता से) आता है, न कि आपके मस्तिष्क से।

अब मैं आपको अपना रहस्य बताती हूँ। आप प्रार्थना कीजिये, "माँ, मेरे लिये कृपया ऐसा कर दीजिये"। आप आश्चर्य करेंगे। मैं आपकी विनती पर विचार नहीं करती। केवल उसे अपनी निर्विचारिता को समर्पित कर देती हूँ। सम्पूर्ण संयन्त्र वहाँ क्रियाशील होता है। उसे (विचार को) उस संयन्त्र (निर्विचारिता) में डालिये और माल तैयार होकर आपके सम्मुख आ जाता है। आप उस संयन्त्र–यों कहें नीरव अथवा शान्त संयन्त्र-को काम तो करने दीजिये। अपनी सारी समस्याएं उसको सौंपिये। किन्तु बुद्धि-जीवियों के लिये यह अत्यन्त कठिन है क्योंकि उनको प्रत्येक बात के बारे में सोचने की आदत होती है।

किसी विषय को समझने की कोशिश करते समय आप निर्विचारिता में प्रवेश करने की क्षमता प्राप्त कीजिये। आप देखेंगे सब कुछ स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। आप जो अनुसन्धान करते हैं वह भी निर्विचार अवस्था में करना चाहिये। निर्विचार अवस्था में कार्य-रत रहने का अभ्यास कीजिये। इस भाँति आप अति उत्तम ढंग से अपना अनुसंधान कार्य कर सकते हैं। मैं अनेक विषयों पर बोलती हूँ। अपने जीवन में मैंने कभी विज्ञान का अध्ययन नहीं किया और उस विषय में कुछ नहीं जानती। फिर यह सब ज्ञान कहाँ से आता है? निर्विचारिता से। मैं बोलती जाती हूँ और जो कुछ होता है उसे देखती रहती हूँ। मेरे वाणीरूपी कम्प्यूटर में मानो यह सब कुछ पहले से तैयार करा कराया रखा था। यदि आप निर्विचार अवस्था में नहीं हैं तो आप उस कम्प्यूटर (अर्थात् निर्विचारिता) का उपयोग नहीं कर रह हैं और अपने मस्तिष्क को उसके ऊपर प्रतिष्ठित करते हैं (अर्थात् आपका निर्विचारितारूपी कम्प्यूटर निष्क्रिय रहता है और आपके सब कार्य मानव मस्तिष्क शक्ति, जो सीमित है, उसके बल पर होते हैं) निर्विचारिता एक प्राचीन कम्प्यूटर है और इसकी शक्ति से विपुल परिमाण में सही कार्य किया गया है। यदि आप अपने मस्तिष्क का उपयोग करते हैं और इस कम्प्यूटर का आश्रय नहीं लेते तो आप निश्चित् रूप से गलतियाँ करेंगे।

निर्विचार अवस्था में जो कुछ भी घटित होता है वह प्रबुद्ध और प्रकाशमान होता है। हिन्दी, मराठी तथा संस्कृत भाषाओं में किसी शब्द से पहले 'प्र' युक्त करने से उसका अर्थ होता है प्रकाशित, प्रकाशमान। प्रकाश कभी बोलता नहीं। यदि आप कमरे की बत्ती जला दें, तो वह बत्ती (दीप) बोलेगी नहीं अथवा कोई विचार आपको नहीं देगी। वह केवल सब कुछ दृष्यमान (प्रकट) कर देगी। यही बात निर्विचारिता रूप प्रकाश के बारे में है। निर्विचार, निरहङ्कार (अर्थात् अहङ्कार रहित) इत्यादि सब शब्दों के पहले 'नि:' जुड़ा है। आप इसे (अर्थात् 'नि:' को) अपने भीतर स्थापित कीजिये और तब आप निर्विकल्प अवस्था में आ जायेंगे। पहले निर्विचार, तत्पश्चात् निर्विकल्प। तब आपके समस्त सन्देह व शङ्कायें समाप्त हो जाती हैं और आपको प्रतीत होता है कि कार्य करने वाली शक्ति अत्यन्त द्रुत गति से काम करती है और अत्यन्त सूक्ष्म है। आप आश्चर्य करेंगे यह सब कैसे घटित होता है!

यही बात समय के विषय में है। मैं कभी घड़ी की तरफ़ नहीं देखती। यह कभी-कभी रुक जाती है, कभी ग़लत समय बताती है। किन्तु मेरी असली घड़ी निर्विचारिता में है। यह हमेशा स्थिर (शान्त) रहती है। यदि कोई कार्य करना

हो तो वह उचित् समय पर हो जाता है। फिर मन में कुछ पश्चाताप नहीं होता कि यह समय पर हुआ अथवा देरी से। जब भी हो, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

कल मेरी गाड़ी (कार) खराब हो गई। किन्तु मैं आनन्दमग्न थी क्योंकि मैं तारागणों को देखना चाहती थी। वह सौंदर्य लन्दन में उपलब्ध नहीं होता। अत: मैं वह देखना चाहती थी। इसका सौंदर्य सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त था। आकाश की अभिलाषा थी माँ उसकी इस छटा को देखें। कभी-कभी मुझे उस ओर भी देखना आवश्यक होता है। मैं उसका आनन्द लाभ कर रही थी। संक्षेप में, आपको किसी वस्तु का दास नहीं होना चाहिये।

यदि आप निर्विचार अवस्था में हैं तो परमात्मा आपको सर्वत्र ले जाते हैं मानो अपने हाथों पर उठा कर, ऐसी सरलतापूर्वक। वह सब प्रबन्ध कर देते हैं। वह सब कुछ जानते हैं और उन्हें कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं। किन्तु आपको देखना है कि आप मुख्य धारा (निर्विचारिता) में हैं अथवा नहीं। यदि आप इसमें नहीं हैं ओर आप कहीं किनारे पर अटके हैं तो प्रवाह, तरङ्ग आती है और आपको मुख्य धारा में ले जाती है, एक बार, दो बार, तीन बार। **किन्तु यदि आप फिर भी किनारे पर आकर अटक जाते हैं, तब आप कहते हैं, "माता जी, मेरा कोई कार्य सुचारु रूप से नहीं होता। वास्तव में होगा भी नहीं। कारण, आप किनारे पर अटके हैं।**

श्री गणेश की जो आप स्तुति गान करते हैं वह अत्यन्त सुन्दर है। इसमें कहते हैं "मुख्य धारा (प्रवाह) में प्रवाहित. ....." जिसका अर्थ है प्रकाशमान मुख्य धारा (प्र+वाह)। आप इसमें अपनी पृथक् लहर, तरङ्ग न मिलायें। श्री गणेश की आरती में यह भी आता है "निर्वाणी रक्षावे" अर्थात् मृत्यु के समय मेरी रक्षा करें। आप यह भी कहते हैं "रक्ष: रक्ष: परमेश्वरी" हे परमात्मा, आप मेरी रक्षा करें। किन्तु आप स्वयं ही अपनी रक्षा करना चाहते हैं। फिर परमात्मा आपकी रक्षा क्यों करें? वह (परमात्मा) कहते हैं "उसे अपनी रक्षा अपने आप ही करने दो।" मैं इस बात पर बल देना चाहती हूँ कि आपको गइराई में जाना सीखना चाहिये और निर्विचारिता में ही सब कुछ प्राप्त करना चाहिये। तभी आप निर्विकल्प स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

आपको निरासक्त रहना चाहिये। यहाँ भारत में लोग कहते हैं "मेरा बेटा, मेरी बेटी।" इङ्गलैंड में इसके विपरीत होता है। वहाँ बेटा, बेटी किसी से कोई लगाव (आसक्ति) नहीं होती। वे केवल अपने स्वयं के बारे में सोचते हैं। यहाँ हर चीज़ में 'मेरा, मेरा' मेरा लड़का, मेरी लड़की, मेरा मकान और अन्त में विचारों में केवल 'मैं' और 'मेरा' ही बाक़ी रह जाता है, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। आपको कहना चाहिये मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ आपका ही है। सन्त कबीर कहते हैं, "जब तक बकरी जीवित रहती है तब तक वह 'मैं', 'मैं' करती है। किन्तु उसको मारने के बाद उसकी आँतों के तारों से जो ताँत (जिसे धुनिया रूई धुनता है) बनती है। उसमें से 'तू ही-तू ही' आवाज़ आती है। आपको भी 'तू ही-तू ही' भावना में मग्न रहना चाहि। जब आप 'मैं नहीं हूँ' मेरा कोई अस्तित्व नहीं है' इस भावना में दृढ़ स्थित हो जाते हैं तभी आप 'नि:' शब्द को समझ सकेंगे।

अब 'निर्मला' नाम के अन्तिम अक्षर 'ला' के विषय में विचार करें। मेरा दूसरा नाम है 'ललिता'। यह देवी का आशीर्वाद है। यह उसका आयुध (शस्त्र) है। जब 'ला' अर्थात् 'देवी' ललिता रूप धारण करती है अथवा जब शक्ति ललित अर्थात् क्रियाशील रूप में परिणत होती है अर्थात् जब उस में चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होती हैं, जो आप अपनी हथेलियों पर अनुभव कर रहे हैं, वह शक्ति 'ललिता शक्ति' है। यह सौंदर्य एवं प्रेम से परिपूर्ण है। जब प्रेम की शक्ति जागृत होती है तब वह 'ला' शक्ति बन जाती है। यह आपको चारों ओर से घेर लेती है। जब वह क्रियाशील होती है तब चिन्ता कैसी? तब आपकी कितनी शक्ति होती है? क्या आप वृक्ष से एक फल भी बना सकते हैं। फल की तो बात क्या, आप एक पत्ता अथवा जड़ भी नहीं बना सकते। केवल मात्र 'ला' शक्ति यह सब कार्य करती है। आपको जो आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हुआ है वह भी इसी शक्ति का काम है। इसी शक्ति से 'नि:' तथा 'म' (निर्मला नाम के प्रथम व द्वितीय अंश) शक्तियों का जन्म हुआ है। 'नि:' शक्ति श्री ब्रह्मदेव की श्री सरस्वती शक्ति है। सरस्वती शक्ति में आपको 'नि:' के गुण अर्जन (प्राप्त) करने चाहिये। 'नि:' शक्ति प्राप्त करने का अर्थ है पूर्णत: निरासक्त बनना। आपको पूरी तरह निरासक्त बनना चाहिये।

'ला' शक्ति में प्रेम का समावेश (सम्मिलित) है वह हमारा दूसरों से नाता जोड़ती है। 'ल' शब्द 'ललाम', 'लावन्य' में आता है। 'ला' शब्द में उसका अपना ही विशेष माधुर्य है और आपको उससे (माधुर्य से) अन्य लोगों को प्रभावित करना चाहिये। दूसरों से बातचीत करते समय आपको इस शक्ति का प्रयोग करना चाहिये। चराचर में यह प्रेम की शक्ति व्याप्त है। ऐसी स्थिति में आपका क्या कर्त्तव्य है? आपको अपने सारे विचार प्रथम (नि:) शक्ति पर छोड़ देना चाहियें क्योंकि विचारों का जन्म उस प्रथम शक्ति से ही होता है। अन्तिम (ला) शक्ति, जो प्रेम और सौंदर्य की शक्ति है, उससे आप को प्रेम के आनन्द का रसास्वादन करना चाहिये। यह कैसे करें? अपने आपको दूसरों के प्रति प्रेम भाव में भूल जायें, उस भाव में खो जायें। क्या किसी ने अनुमान लगाया है कि वह दूसरों से कितना प्रेम करता है? यह बढ़ता ही रहना चाहिये। आप दूसरों को कितना प्यार करते हैं और इस भाव में कितना आनन्द लेते हैं? क्या इस बारे में आपने सोचा है? मानवों के विषय में मैं कह नहीं सकती, किन्तु अपने स्वयं के विषय में मैं कह सकती हूँ कि मैं दूसरों से प्रेम करने में अत्यन्त आनन्द अनुभव करती हूँ। अनुभव करें, कैसे चारों ओर प्रेम की गङ्गा बह रही है, वह अनुभूति कितनी आनन्ददायक है। एक गायक को देखिये, वह कैसे अपने स्वयं के राग में अपने आपको

भूल जाता है, उसमें खो जाता है और सर्वत्र उस संगीत को प्रवाहित होते अनुभव करता है। इसी भाँति प्रेम भी अबाधित रूप से प्रवाहित होना चाहिये। अत: आप 'ललाम' शक्ति, जो चैतन्य लहरियों के रूप में विशुद्ध दिव्य प्रेम की शक्ति है उसे पहले अपने भीतर जागृत करें।

आप देखें कि आप दूसरों की ओर किस दृष्टि से देखते हैं। कुछ निम्न स्तर के लोग दूसरों से कुछ चुराने अथवा उनसे कुछ लाभ उठाने के भाव से देखते हैं, कुछ दूसरों के दोषों को देखते हैं। पता नहीं इसमें उन्हें क्या आनन्द आता है। इस भाँति वे अकेले, अलग-थलग हो जाते हैं और फिर कष्ट भोगते हैं। यह स्वयं कष्टों को निमन्त्रण देना है। मुझे तो सबसे मिलने, भेंट करने में आनन्द आता है।

आपको 'ललाम' शक्ति को–जो चैतन्य लहरी रूप में दिव्य प्रेम की शक्ति है–उपयोग करना चाहिये। दूसरे व्यक्ति को देखने मात्र से आप निर्विचारिता में पहुँच जायें। इससे दूसरा व्यक्ति भी निर्विचार हो जायेगा। अत: आप अपने को एवं दूसरों को भी विशुद्ध दिव्य प्रेम का बन्धन दें। 'नि:' शक्ति और 'ला' शक्ति को बँधने दें। 'ला' शक्ति अर्थात् चैतन्य लहरियों के रूप में प्रेम की शक्ति को 'नि:' शक्ति अर्थात् निर्विचारिता में पहुँचाना, परिणत करना है। दोनों को बन्धन देना लाभप्रद है। बहुत से लोगों से, जो बड़े अभिमानी हैं अथवा जो सोचते हैं कि वे बड़े काम करने वाले, कर्मवीर हैं, उनसे मैं अपनी बायें पार्श्व (side) को उठाने को बताती हूँ। इस भाँति हम अपने स्वयं के पञ्च तत्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) में अपने स्वयं के विशुद्ध दिव्य प्रेम को भरते हैं, संचारित करते हैं। अपने हृदय के प्रेम की शक्ति (हमारा बायाँ पार्श्व) को अपनी क्रिया शक्ति (हमारा दायाँ पार्श्व) में पहुँचाना चाहिये, जैसे आप कपड़े पर रंगों से चित्रण करते है। जब इस भाँति क्रिया शक्ति में प्रेम शक्ति का सम्मिश्रण किया जाता है तब वह व्यक्ति अत्यन्त मधुर बन जाता है और क्रमश: वह माधुर्य, प्रेम उसके व्यक्तित्व और उसके आचरणों में प्रकाशमान होता है। वह प्रेम प्रवाहित होकर दूसरों को प्रभावित करता है और उसकी प्रत्येक क्रिया अत्यन्त रसमय हो जाती है। वह व्यक्ति इतना आकर्षणयुक्त बन जाता है कि आप घण्टों उसकी संगति में आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। आपका प्रेम दूसरों को आनन्ददायक और दूसरों के मन को जीतने वाला बनना चाहिये। इसके फलस्वरूप सब आपके मित्र बन जाते हैं और परस्पर प्रेम बढ़ता है। प्रत्येक अनुभव करता है कि एक स्थान है जहाँ उसे प्रेम और वात्सल्य मिल सकता है। अत: आपको प्रेम की ईश्वरीय शक्ति को अपने भीतर विकसित करना चाहिये।

हमें सदैव निर्विचारिता ('नि:' शक्ति) में रहना चाहिये। जब भी कोई विचार आये तो सोचिये ईश्वर की प्रेमरूपी पवित्र गङ्गा में यह गन्द कहाँ से आ गई? ऐसी चित्त-वृत्ति से हमारी 'ला' शक्ति अर्थात् दिव्य प्रेम की शक्ति सदैव स्वच्छ, निर्मल रहेगी और स्वच्छता के आनन्द में हम विभोर रहेंगे।

आप दूसरों की टीका-टिप्पणी (criticism) न करें। यदि आप मुझसे किसी व्यक्ति के विषय में पूछें तो मैं केवल उसकी कुण्डलिनी की अवस्था के विषय में बता सकती हूँ अथवा उसका कौन सा चक्र इस समय पकड़ा हुआ है अथवा बहुधा पकड़ा रहता है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं समझ सकती कि वह कैसा है, उसका स्वभाव कैसा है, इत्यादि। यदि इस विषय में मुझसे पूछा जाए तो मैं कहूँगी, स्वभाव होता क्या है? यह परिवर्तनशील होता है। नदी इस समय यहाँ बह रही है। बाद में उसका बहाव कहाँ होगा, कौन बता सकता है? इस समय आप कहाँ हैं? यही विचार करने की बात है। आप नदी के इस किनारे पर खड़े हैं तो आपको विचित्र लगता है कि नदी यहाँ बह रही है। मैं समुद्र की दिशा में खड़ी हूँ। इस कारण मैं जानती हूँ इसका उद्गम-स्थल कौन सा है। **अत: आप किसी को भी व्यर्थ, निकम्मा न कहें। प्रत्येक व्यक्ति बदलता रहता है, यह अवश्य होता है।** सहजयोग का कार्य परिवर्तन लाना है। सहजयोग में विश्वास करने वाले व्यक्तियों को किसी को नहीं कहना चाहिये कि वह बेकार हो गया है। प्रत्येक को स्वतन्त्रता होनी चाहिये। आप सब जानते हैं हमारी वर्तमान स्थिति क्या है। यदि आप इस भाँति सोचेंगे तो आप न केवल अपने स्वयं का आत्म-सम्मान करते हैं, बल्कि दूसरों का भी सम्मान करते हैं। जिसमें आत्म-सम्मान नहीं है, वह दूसरों का कभी आदर नहीं कर सकता।

हमें ललाम शक्ति का विकास करना चाहिये। एक पुस्तक लिखकर भी मैं इसका आनन्द पर्याप्त रूप से वर्णन नहीं कर सकती क्योंकि सौंदर्य को प्रकट करने के लिये शब्द असमर्थ हैं। अर्थात्, यदि आपको 'मुस्कान' का वर्णन करना हो तो आप केवल कह सकते हैं कि स्नायु कैसे आन्दोलन (हरकत) करते हैं। आप उसके प्रभाव को नहीं बता सकते। यह तो केवल अनुभव की वस्तु है। आप केवल इस शक्ति को जागृत और विकसित होने का अवसर दें।

'ललाम' शक्ति से मनुष्य को एक प्रकार का सौंदर्य, एक भव्यता और स्वाभाव में माधुर्य प्राप्त होता है। इस शक्ति को अपने वचन, कर्म तथा अन्य क्रिया-कलापों में विकसित करने का प्रयास करें। कुछ लोगों का रोष भी मनोहारी होता है। इस मधुर, मनोहारी शक्ति को 'ललित' शक्ति कहते हैं। लोगों ने इसके भाव को बिल्कुल विकृत कर दिया है। वे कहते हैं यह संहार की शक्ति है। किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं है। यह शक्ति अति मनोरम, सृजनात्मक और कलात्मक है। मानो आपने एक बीज बोया। उसके कुछ अंश नष्ट हो जाते हैं, जिसे 'ललित' शक्ति कहते हैं। किन्तु यह विनाश अत्यन्त कोमल और सरल होता है। तब बीज उगकर एक वृक्ष बनता है जिसमें पत्ते होते हैं। फिर पत्ते झड़ते हैं। यह क्रिया भी अत्यन्त सुकोमल व सरल होती है। तब फूल आते हैं। जब फूल-फल बनते हैं, तब उनके अंश झड़ कर गिर जाते हैं और तब फल आते हैं। उन फलों को भी खाने के लिये काटा जाता है। खाने पर

आपको स्वाद प्राप्त होता है। वह भी यही शक्ति है। इस प्रकार ये दोनों शक्तियाँ काम करती हैं। आप जानते हैं बिना काटे, सँवारे आप कोई मूर्ति नहीं बना सकते। यदि आप समझ लें कि यह काटना सँवारना भी उसी जाति की क्रिया है तो यदि आपको कभी ऐसा करना पड़े तो आपको बुरा अनुभव नहीं करना चाहिए। वह भी आवश्यक है। किन्तु एक कलाकार इसे कलापूर्ण ढँग से करता है और कला हीन व्यक्ति इसे बेढंगे तरीके से करता है। सो आप में कितनी कला है इस पर यह शक्ति निर्भर करती है।

कभी आप एक चित्र को देखते हैं और आपकी इच्छा करती है आप इसकी ओर देखते ही रहें। यदि कोई पूछे इस चित्र में क्या विशेषता है तो आप शब्दों में नहीं बता सकते। आप बस उन्हें निहारते हैं। कुछ चित्र ऐसे होते हैं कि आप उनकी ओर देखने मात्र से निर्विचार हो जाते हैं। इस निर्विचार अवस्था में आप उसके आनन्द का रसास्वादन करते हैं। यह अवस्था सर्वोत्कृष्ट है। इसकी किसी अन्य वस्तु से तुलना अथवा मुस्करा कर व्यक्त करने के स्थान पर आपको इस स्थिति के आनन्द का मन भरकर रसास्वादन करना ही उचित् है। इसका वर्णन करने के लिये न कोई शब्द है और न कोई भाव-भंगी (मुखाकृति) पर्याप्त है। आपको इसका अपने अन्दर अनुभव करना है। सबको यह अनुभव लाभ होना चाहिए।

'निः' और 'ला' के मध्य में 'म' शब्द अत्यन्त रोचक है। 'म' महालक्ष्मी का प्रथम अक्षर है। 'म' धर्म (पवित्र आचरण) की शक्ति है और हमारी उत्क्रान्ति की भी। 'म' शक्ति में आपको समझना होता है, फिर उसे आत्मसात करना होता है और पूर्णतः (mastery) कुशलता, प्राप्त करनी होती है। उदाहरण के लिये, एक कलाकार में 'ल' शक्ति से उसके सृजन का विचार अंकुरित होता है 'नि' शक्ति द्वारा वह उसका निर्माण करता है और 'म' शक्ति के द्वारा वह उसे अपने विचार के अनुरूप बनाता है। प्रत्येक पग पर वह देखता है कि क्या यह उसके विचार के अनुरूप है और यदि नहीं तो वह उसमें सुधार करने की कोशिश करता है। वह यह बार-बार करता है। यह 'म' शक्ति है अर्थात् यदि कोई वस्तु ठीक नहीं है तो एक बार, दो बार, बार-बार करें।

इस सुधार कार्य में परिश्रम लगता है। हमें अपने स्वयं का भी सुधार करना चाहिए। यदि यह न होता तो उत्क्रान्ति की क्रिया असम्भव थी। इस के लिये परमात्मा को महान् परिश्रम करना पड़ता है। हमें 'म' शक्ति अर्जित करनी है और उसे संभाल कर रखना है। यदि यह न किया जाय तो दूसरी दोनों शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि यह शक्ति सन्तुलन बिन्दु (centre of gravity) है। आपको सन्तुलन बिन्दु पर स्थित रहना चाहिये और हमारी उत्क्रान्ति का सन्तुलन बिन्दु 'म' शक्ति है। अन्य दोनों शक्तियाँ तभी आपके भीतर सक्रिय होंगी जब आप उत्क्रान्ति शक्ति के अनुरूप उन्नति करें। किन्तु उसके लिये आपको 'म' शक्ति को पूर्णतः समझना होगा और उसे विकसित करना होगा।

जब तक आप आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं है तब तक आप कह सकते हैं कि यदि ईश्वर आपसे प्रेम करते हैं तो उन्हें आपके पास आना चाहिये, किन्तु साक्षात्कार-प्राप्ति के पश्चात् आप ऐसा न कह सकेंगे। क्योंकि 'म' शक्ति के बल पर आपको दूसरी दो शक्तियों का सन्तुलन करना है। संगीत में आप को रागों का सन्तुलन करना पड़ता है, चित्रकला में आपको रङ्गों का सन्तुलन करना पड़ता है। इसी भाँति आपको 'निः' और 'ला' शक्तियों का सन्तुलन करना आवश्यक है। इस सन्तुलन प्राप्ति के लिये आपको परिश्रम करना पड़ेगा। अनेक बार आप वह सन्तुलन खो बैठते हैं। जो सहजयोगी इस सन्तुलन को बनाये रखता है वह उच्चतम स्तर पर पहुँच जाता है।

बहुत भावुक सहजयोगी ठीक नहीं। इसी तरह बहुत ज्यादा कामों में फँसा रहने वाला सहजयोगी भी ठीक नहीं। आपको अपने प्रेम की शक्ति को सक्रिय करना चाहिये और देखना चाहिये कि अब तक वह कैसी क्रियाशील रही है। उदाहरणार्थ, मैं किसी एक ढँग से काम करती है किन्तु उसमें भी मैं प्रत्येक बार कुछ परिवर्तन कर देती हूँ। आपने देखा होगा कि हर बार कुछ नवीनता, कोई नया तरीका होता है। यदि एक तरीके से काम नहीं चलता, दूसरा तरीका अपनाइये। यदि यह भी असफल रहता है तो और कोई ढूँढिये। किसी भी पद्धति पर अटल नहीं होना चाहिये। आप प्रातः उठते हैं, सिंदूर लगाते हैं, श्री माँ को नमस्कार करते हैं। यह सब यान्त्रिक (mechanical) होता है। यह जीवन्त प्रक्रिया नहीं है। जीवन्त प्रक्रिया में आपको नित्य नई पद्धतियां खोजनी होंगी। मैं सदैव वृक्ष की जड़ का उदाहरण देती हूँ। बाधाओं से मोड़ लेते हुए, बचते हुए, यह क्रमशः नीचे और नीचे पृथ्वी के भीतर उतरती चली जाती है। यह बाधाओं से झगड़ती नहीं। बाधाओं के बिना जड़ें वृक्ष को सँभाल भी नहीं सकती थीं। अतः समस्याएँ, बाधाएँ आवश्यक है। वे न हों तो आप उन्नति भी नहीं कर सकते। वह शक्ति, जो आपको बाधाओं पर विजय पाना सिखाती है, वह 'म' शक्ति है। अतः यह 'म' शक्ति अर्थात् माँ की शक्ति है। उसके लिये विवेक प्रथम आवश्यक गुण है।

सोचिये कोई व्यक्ति बड़ा कोमल स्वभाव है और कहता है 'माँ' मैं अत्यन्त मृदु हूँ, मैं क्या कर सकता हूँ। मैं उससे कहती हूँ अपने को बदलो और एक सिंह बनो। यदि कोई दूसरा व्यक्ति सिंह है, तो मैं उसे बकरी बनने को कहती हूँ। अन्यथा काम नहीं चलता। आपको अपने तरीके बदलने होंगे। जो व्यक्ति अपने तरीके नहीं बदल सकता, वह सहजयोग नहीं फैला सकता, क्योंकि वह एक ही तरीके पर जमा रहता है जिससे लोग ऊब जाते हैं। आपको नये मार्ग खोजने होंगे। इसी भाँति 'म' शक्ति कार्य करती है। (महिलायें इसमें निपुण होती हैं। ये प्रतिदिन नये व्यंजन (भोज्य पदार्थ, recipes)

बनाती हैं और पति जानने को उत्सुक रहते हैं कि आज क्या बना है।

यह वह शक्ति है जिसके द्वारा आप अपना सन्तुलन और एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं। जब आप इस शक्ति को उच्चतम स्तर पर विकसित कर लेते हैं तब आप अपने सन्तुलन तथा बुद्धि स्तर से चैतन्य लहरियाँ अनुभव करते हैं। यदि आप में बुद्धिमानी नहीं है तो आप में उक्त लहरियाँ प्रभावित नहीं होंगी।

अधिकतम चैतन्य लहरियों-सम्पन्न व्यक्ति निश्चित बुद्धिमान व्यक्ति होता है। वास्तव में यह बुद्धिमत्ता ही है जो प्रवाहित हो रही है। इस माप-दण्ड से यह निश्चित हो सकता है कि आप किस स्तर के सहजयोगी हैं।

जब आप सन्तुलन तथा बुद्धि खो देते हैं तो स्वाभाविक रूप से आपके चक्र पकड़े (बाधाग्रस्त) जाते हैं। जब आपके चक्र बाधाग्रस्त हों तो समझ लीजिये आपका सन्तुलन बिगड़ गया है। असन्तुलन संकेत करता है कि 'म' शक्ति आप में दुर्बल है। 'माताजी' अर्थ वाचक किसी भी शुभ नाम का प्रथम अक्षर 'म' होता है और वह कार्य मेरे भीतर 'म' शक्ति द्वारा किया गया है। यदि केवल 'नि' और 'ल' दो शक्तियाँ ही होती, तो यह कार्य सम्भव नहीं था। मैं तीनों शक्तियों सहित आई हूँ, किन्तु 'म' शक्ति सर्वोच्च है। आपने देखा 'म' 'शक्ति' माँ की शक्ति है। यह सिद्ध करना होगा कि वह आपकी माँ है। यदि कोई आकर कहे "मैं आपकी माँ हूँ" तो क्या आप मान लेंगे? नहीं, आप स्वीकार नहीं करेंगे। मातृत्व को सिद्ध करना होगा।

माँ क्या है?

माँ ने अपने हृदय में हमें स्थान दिया है। हमें माँ पर और माँ को हम पर पूर्ण अधिकार है क्योंकि वह हमें अपार प्यार करती है। उसका प्रेम नितान्त निःस्वार्थपूर्ण है। वह सदैव हमारी मङ्गल कामना करती है और उसके हृदय में हमारे लिये वात्सल्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। माँ में आपको आस्था तभी प्राप्त होगी जब आप यह समझ लेंगे कि आपकी वास्तविक शोभा, अर्थात् आपकी आत्मा, उनमें ही वास करती है। आप दूसरों को यह सिद्ध करके दिखाये। सहजयोगी में ऐसी सामर्थ्य होनी चाहिये। अन्य लोगों को पता हो कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है। उसके लिये आप में प्रेम और क्रियाशीलता दोनों शक्तियों में सन्तुलन आवश्यक है। वह इतना मनोहारी होना चाहिये कि बिना जाने अन्य लोग ऐसे व्यक्ति से प्रभावित हों। सहजयोगी को यह गुण अर्जन करना चाहिये।

घर जाकर आप विचार करें कि इन तीनों 'नि', 'ला' और 'म' शक्तियों को कैसे सक्रिय कर प्रयोग करें। 'निः' शक्ति आपके परिवार में पूर्ण सौंदर्य और गम्भीरता, गहराई लायेगी। जन-सम्पर्क के आप नये-नये मार्ग और साधन खोजें। इन शक्तियों का आप सहजयोग के प्रचार के लिये उपयोग करें। उनके उचित् उपयोग के लिये आपकी 'निः' शक्ति, अर्थात् क्रियाशक्ति, अत्यन्त बलशाली होनी चाहिये। यद्यपि आप में 'ला' शक्ति अर्थात् प्रेम की शक्ति होनी चाहिये, किन्तु यह 'निः' शक्ति के साथ-साथ संयुक्त रूप से क्रियान्वित होनी चाहिये। यदि एक तरीका सफल नहीं होता, तो दूसरा तरीका अपनाइये। पहले लाल और पीला लें, यदि यह उपयुक्त नहीं रहता तो लाल और हरा उपयोग करें और यदि यह भी ठीक नहीं रहता तो और अन्य कोई उपयोग करें। **हठी होना, किसी बात पर अड़ना बुद्धिमानी नहीं है। हठधर्मी व्यक्ति सहजयोग में कुछ नहीं कर सकता।** आपका उद्देश्य तो केवल सहजयोग का प्रचार करना है, तो विभिन्न मार्ग अवलम्बन कर देखिये। आप जो भी आग्रह करते है वही मैं स्वीकार कर लेती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि साधारण मानव मेरी भाँति नहीं है। हठधर्मी व्यक्ति क्या कर बैठे, कहा नहीं जा सकता। आप उसे पराकाष्ठा अर्थात् हद पर जाने की स्थिति न आने दें। 'म' शक्ति से मैं यह सब जानती हूँ। किन्तु आप सहजयोगियों को किसी एक बात पर हठ नहीं करना चाहिये। आपकी माँ हठ नहीं करती। जो भी स्थिति हो, स्वीकार कर लें। आप जो भी करें, ध्यान रखें कि आप एक महत्त्पूर्ण कार्य कर रहे हैं। मुझ में कोई इच्छा नहीं है। मुझ में 'निः', 'ला', 'म' कोई शक्ति नहीं है। मुझ में कुछ भी नहीं है। मैं यह भी नहीं जानती मैं स्वयं इन शक्तियों की मूर्तस्वरूप हूँ। मैं केवल सब खेल देखती हूँ।

जब जीवन में इस प्रकार परिवर्तन आ जायेगा तब मनुष्यों में सिद्ध सहजयोगीजन होंगे जिन्हें सहजयोग में पूर्ण सिद्धता, निपुणता प्राप्त होगी। अभी तक वे सिद्ध नहीं हुये हैं। आपको सिद्धता प्राप्त करनी है। सिद्ध सहजयोगी वह है जो पूर्ण रूप से परमात्मा से एकरूप हो जाये और उसे अपने वश में कर ले। उसको उसके लिये सर्वस्व अर्पित करना होता है। मैं जा रही हूँ। उसके बाद देखेंगे आप अपनी सिद्धता का किस भाँति और किस क्षेत्र में उपयोग करते हैं।

कभी-कभी मैं आपको कुछ बातों के लिये मना करती हूँ। आपको उसका बुरा नहीं मानना चाहिये। 'म' शक्ति के सिद्धान्त अनुसार आपको निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि आपका मार्ग दर्शन करना मेरा कर्त्तव्य है। कुछ लोग निराश हो जाते हैं। आप ध्यान रखें आपको सिद्ध बनना है। दूसरे स्वीकार करें आप सिद्ध हैं। ज्यों ही वे आपको देखें उन्हें स्पष्ट हो आप सिद्ध हैं। आप इसके लिये यत्न करें। यदि यह होता है तो सब शुभ होगा।

एक दिन मैंने आपसे कहा था कि आप अपने सब मित्र और सम्बन्धियों को मध्याह्न अथवा रात्रि भोज के लिये पूजा या किसी अन्य कार्यक्रम के लिये आमन्त्रित करें। साथ ही कुछ सहजयोगियों को भी आमन्त्रित करें और अपने सब अतिथियों को आत्म-साक्षात्कार प्रदान करें। यदि एक साल तक आप ऐसा करें तो बड़ा लाभकारी होगा।

सबको अनेक आशीर्वाद।

लक्ष्य

ग्रहों औरसितारों से घिरे सूर्य का आस्तित्व,
है केवल 'माँ' के शरीर पर किरणें बिखेरने के लिए,
'माँ' को प्रसन्न करने की खातिर,
पाता हूँ जब पवन देव को
पुष्प सुगन्ध 'माँ' की ओर ले जाते हुए,
'माँ' के पवित्र्य एवं अबोधिता को दर्शाने की खातिर,
देखता हूँ जब श्वेत–निरभ्र हिमपात को,
देखता हूँ जब पर्वतों को साक्षी भाव में,
शान्तिपर्वूक 'माँ' के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए,
'माँ' के साक्षात शरीर को सहलाने की खातिर,
देखता हूँ जब बादलों को रिमझिम बरसते हुए,
माँ के चरण कमलों पर पुष्पांजलि अर्पण करने की खातिर,
देखता हूँ जब पुष्पित वृक्षों को पुष्प बरसाते हुए,
सुनता हूँ जब पक्षियों को माँ की पूजा की खातिर,
पूजा गीत गाते हुए,
तब महसूस होता है मुझे
कि 'विश्वरूपा हैं वो,
समस्त ब्रह्माण्ड उन्हीं का रूप है,
प्रसन्न करना परमेश्वरी माँ को,
प्रकृति की हर चीज़ का एक मात्र लक्ष्य है।

●●

अहँ

श्री माता जी, यह सोचना प्रवृत्ति है हमारी,

कि अन्य लोग कुपित करते हैं हमें,

उपद्रवी हैं, और सबब हैं हमारी परेशानी का,

पर असलियत तो यह है कि,

निर्लिप्सा पूर्वक साक्षी रूप से,

अपने औरदूसरों के कार्य कलापों को

न देख पाने के कारण

सबब हैं हम स्वयं ही अपनी परेशानी का,

क्योंकि साक्षी जब भी हम

बन पाते नहीं,

बढ़ावा देते हैं अपने अहँकार को।

याचना इसलिए करते हैं माँ,

कम कर दें अहँ हमारा तथा

उत्थान पथ पर अग्रसर करें।

●●

ईसा मसीह पूजा–गणपति पुले 25.12.1995

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(चेतना के सात स्तर)

ईसा मसीह के जन्मोत्सव पर आप सबको शुभकामनाएँ। आज के महान दिवस ईसा मसीह पृथ्वी पर अवतरित हुए। आप सभी जानते हैं कि मानवता के उद्धार को कार्यान्वित करने के लिए किस प्रकार विशेष रूप से मानव रूप में उनकी सृष्टि की गई। ऐसा कहा जाता है कि वे भारत में कश्मीर में आए और वहाँ के राजा, शालिवाहन से मिले। यह सब हमारे पास संस्कृत में लिखा हुआ है। और मैंने स्वयं उस संस्कृत संवाद को पढ़ा है, जो ईसा-मसीह और देवी भक्त राजा शालिवाहन में मध्य हुआ। जब राजा ने ईसा-मसीह से उनका नाम-परिचय पूछा तो उन्होंने कहा "मैं मलेच्छों के देश से आया हूँ और मुझे यह (भारत) अपना देश लगता है।" शालिवाहन ने उन्हें कहा, इस पृथ्वी पर अवतरित होने वाले आप एक महान पुरुष हैं, अत: अधोपतन से रक्षा करने तथा जीवन के पवित्र सिद्धान्त के विषय में उन लोगों को बताने के लिए आपको उन्हीं देशों में लौट जाना चाहिए। संस्कृत में इसे 'निर्मल तत्वम्' कहा गया है। इसलिए ईसा मसीह यहाँ से वापिस चले गए। परन्तु जाने के 3 1/2 वर्ष पश्चात ही उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। यह विशेष समय था जिसे मैं तपस्या का समय कहती हूँ। उसी समय बुद्ध और महावीर ने भी विराट के मस्तक के उसी स्तर पर जन्म लिया।

आप सभी जानते हैं कि वेदों के अनुसार हमारे सात 'चेतना स्तर' हैं, जिन्हें हमें पार करना है या हमारे अन्तर्निहित वे सात सूक्ष्म गुण हैं। इनमें से प्रथम है 'भु:'–इस तत्व से गणेश जी की उत्पत्ति हुई। दूसरा है 'भुव:'– जिसका अर्थ है अन्तरिक्ष अर्थात वह सब जिसकी सृष्टि हमारे चहुँ ओर की गई। तीसरा है 'स्वाहा'–जो नाभि चक्र पर है। स्वाहा–जहाँ सब भस्म हो जाता है। आजकल आप देखते हैं कि लोग सब चीज़ों का उपभोग करते चले जाते हैं। सभी प्रकार की पुस्तकें पढ़ते हैं। सभी प्रकार के कृत्य करते हैं। यदि आप उनसे पूछें "आप ऐसा क्यों करते हैं? तो कहेंगे "इसमें क्या त्रुटि है।" "ऐसा क्यों पहनते हैं?" तो कहेंगे, "इसमें क्या दोष है?" यह विवेकहीन उपभोग चल रहा है। पर इसी चक्र पर हमारे अन्दर एक महान गुण भी है जिसे 'स्वधा' कहते हैं। स्वधा अर्थात् सभी प्रकार का धर्म। दूसरों द्वारा हम अपने अन्दर धर्म को कायम रखते हैं। यह कोई अन्ध विश्वास नहीं है, यह तो आन्तरिक प्रेरणा है। हम अपने माता-पिता से प्यार क्यों करते हैं? क्योंकि हमारे अन्दर धर्म है। हम अपने देश में ही क्यों रहना चाहते हैं? क्योंकि हमारे अन्दर धर्म है। पति-पत्नि का पारस्परिक प्रेम भी अन्तर्निहित धर्म के कारण ही है। धर्म जब आपके अन्दर होता है तो आप इसे धर्म (Religion) नहीं कहते क्योंकि इसका अर्थ कुछ अन्य भी हो सकता है। जब हम धर्म को अपने अन्दर धारण कर लेते हैं तो वह 'धार्य' हो जाता है और 'स्वधा' बन जाता है अर्थात हमारा अपना गुण। हम इसे अन्तर्जात विवेक भी कह सकते हैं। ऐसे कई गुण तो पशुओं में भी पाए जाते हैं, जैसे माता-पिता से लगाव मालिक से लगाव, आदि।

इसके बाद उच्च चेतना आती है जहां मन है। मन अंग्रेजी भाषा के Mind शब्द से भिन्न है। मन का अर्थ है हमारे अन्दर के भाव। मैंने हाल ही में पढ़ा है कि वैज्ञानिक अब 'बुद्धि लब्धि' (IQ) के साथ-साथ 'भावात्मक लब्धि' (EQ) के बारे में भी बात करने लगे हैं। केवल बुद्धिमान व्यक्ति ही सही नहीं हैं। उनके अन्दर भावनाओं का संतुलन होना भी आवश्यक है। पहले लोग उसी की प्रशंसा करते थे जिसका बौद्धिक स्तर ऊँचा होता था। परन्तु आजकल वे जान गए हैं कि बुद्धि द्वारा लोगों ने किस प्रकार पृथ्वी पर सभी की हिंसा अराजकता तथा विनाश फैलाया है। इसलिए वे आजकल इससे ऊंचे, 'भावनात्मक लब्धि' अर्थात् (EQ) के बारे भी बात करने लगे हैं। यह भावनात्मक गुण भी हमारे अन्दर एक आन्तरिक प्रेरणा, आन्तरिक क्षेम के रूप में आता है। जिससे बचा नहीं जा सकता। जीवन में मनुष्य चाहे जो भी प्राप्त कर ले, परन्तु उसमें यदि प्रेम एवं भावनात्मकता का अभाव है तो वह अधूरा है। ये भावनात्मकता भी सीमित हो सकती है। बौद्धिकता के प्रभाव से हम किसी व्यक्ति या विचार से आसक्त होकर रह जाते हैं, जैसे हिटलर ने अपने विचारों को ही सत्य माना तथा उन्हें क्रियान्वित करने की चेष्टा की। अत: जब आप किसी विचार विशेष से लिप्त हो जाते हैं तो वास्तविता का न तो पोषण कर सकते हैं और न सहायता। युद्ध, विनाश–सभी कुछ घटित हो चुका है। आजकल, लोग चुपके-चुपके दूसरों को नष्ट करने में लगे हुए हैं। विरोध-भाव के रूप में यह सब आ रहा है जहाँ मन बुद्धि पर हावी हो

गया है और बुद्धि भावनाओं पर। अत: हममें एक अन्य अन्तर्जात चेतना, एक अन्य गुण है जन:। जन: अर्थात मनुष्य और उनसे सम्पर्क। मनुष्य अकेला जीवित नहीं रह सकता। जेल जाने वाले किसी मनुष्य का उदाहरण लें। यदि जेल में उसे अच्छा दर्जा प्राप्त हो तो उसे बाहर से भी अधिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं, वह केवल अन्य लोगों से मिल नहीं सकता। उनसे सम्पर्क नहीं बनाए रख सकता। मेल-जोल बनाए रखने के हमारे अन्तर्जात गुण से, जो कि मानव अस्तित्व का अंग-प्रत्यंग है, जब व्यक्ति को वंचित कर दिया जाता है तो वह पूर्णत: हतोत्साहित और दु:खी हो जाता है। जेल से बारह लोगों से मेल-जोल रखते हुए, तुच्छ कार्यों पर परिश्रम करने में भी उसे संकोच नहीं होता। अत: सम्पर्क बनाए रखना भी हमारी आन्तरिक आवश्यकता है। परन्तु ऐसा करते हुए भी लोग कभी-कभी दूसरों के धर्म की छान-बीन करने लगते हैं। वास्तव में धर्म उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता, वे सम्पर्क बनाए रखने के उत्सुक होते हैं। इस प्रकार व्यक्ति असन्तुलित हा जाता है।

इसके उपरान्त छठी चेतना आती है जो कि अत्यन्त रुचिकर है। व्यक्ति बन्धन ग्रस्त हो जाता है। मैं यदि 'भारतीय' हूँ तो मुझे 'भारतीयता' पर गर्व है। व्यक्ति या तो बुराई को बिल्कुल नहीं देख पाता या उसे केवल बुराई दिखाई देती है। यह दोनों ही प्रकार से हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर है कि आप किस प्रकार बन्धन ग्रस्त थे। ये बन्धन हमें अपने छठे चन्द्र 'आज्ञा' से प्राप्त होते हैं। एक अन्य चीज़ जो हम में पनपती है वह है कि जब भी कोई हमें बन्धनों में जकड़ना चाहता है या हमें वश में करना चाहता है तो हम उसके चुंगल से बचने का प्रयत्न करते हैं, या कभी-कभी, प्रभुत्व जमाने की कोशिश करते हैं।

यह दमनकारी प्रवृत्ति भी हमारे अन्दर अन्तर्जात है। इन दोनों प्रवृत्तियों के अन्तर्जात होने के कारण हम संस्कारों में फंसते चले जाते हैं। कुछ लोग तो इतने बुरी तरीके से बन्धन ग्रस्त हैं कि उन्हें इस स्थिति से बाहर निकालना असम्भव है। यह सब स्व केन्द्रित होने का परिणाम है। लोग कुछ समझना ही नहीं चाहते। जैसे, कोई शाकाहारी व्यक्ति आपके घर आकर ठहरता है और कहता है, "मैं तो उन बर्तनों में खाना नहीं खाऊँगा जिनमें मांसाहारी भोजन बनता है। तो आप जाईए और नए बर्तन लाईए। या फिर अपने नौकर को ऐसे स्थान पर भेजिए कि वह कुएँ का पानी ला सके तथा पुरातन भारतीय शैली के अनुसार नौकर पूर्ण रूप से पानी से भीगा होना चाहिए ताकि वह आपके लिए पीने व खाना बनाने के लिए पानी ला सके। भले ही नौकर निमोनिया से मर जाए। इसकी कोई परवाह नहीं है। इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण संस्कार पूर्व में ही मिलते हों ऐसा नहीं है। पश्चिम में तो इससे भी बुरी स्थिति है। वहाँ लोग क्लबों में जाते हैं और हर क्लब के अपने विशेष परिधान होते हैं जो कि लोगों को पहनने अनिवार्य होते हैं। यदि वे किसी दूसरे परिधान में आते हैं तो लोग उनपर हंसते हैं। पश्चिमी देशों में कांटाछुरी का प्रयोग भी एक महत्त्वपूर्ण बात है। आप किस प्रकार इन का प्रयोग करते हैं। अंग्रेज लोग तो मूर्खतापूर्ण ढंग से इस बाधा में फंसे है। यदि कोई कांटा छुरी का प्रयोग गलत ढंग से करता है तो समझिए कि वह बिल्कुल भी शिष्ट नहीं है। इस प्रकार की अस्वभाविकता भी युगों के संस्कारों से ही आती है। सम्भव है, ये लोग आदिवासी हों। उनके पास पहनने के वस्त्र भी न हों। शुरु-2 में तो मनुष्य के पास पहनने के वस्त्र नहीं थे। और वे तन पेड़ों के पत्ते व छाल आदि से ढांपते थे। आज वे दूसरी सीमा पर जा पहुँचे हैं। उनका ध्यान अब अपनी वेशभूषा, छुरीकांटे के बारे में अधिक केंन्द्रित है। किसी भी भिन्न चीज़ को वे सहन नहीं कर सकते। ये कहना वहां आम बात है कि "मुझे यह पसन्द नहीं है। मुझे वह पसन्द नहीं है।" अब वे भारत में आकर कहते हैं कि हमें भारतीयों के कपड़े पहनने का ढंग अच्छा नहीं लगता। ठीक है आप वह पहनिए जो आप को अच्छा लगता है, और भारतीयों को वह सब पहनने दीजिए जो उन्हें अच्छा लगता है। आप यह क्यों सोचते हैं कि इंगलैण्ड की वेशभूषा भारत जैसे गर्म देश में भी ठीक रहेगी। यह सब इसी प्रकार चलता रहता है और मजे की बात यह है कि ये बन्धन इतने गहन हो जाते हैं कि कोई इनके अन्दर छिपी मूर्खता को नहीं देखता और प्रचलित कुसंस्कारों को यदि हम अस्वीकार करते हैं तो हमें असभ्य कहा जाता है। कुसंस्कारों के इस बन्धन ने मानतवा का बहुत नुकसान किया है। उदाहरणतया पश्चिम में फ्रायड को स्वीकार करना पूर्ण धर्म माना गया। उसने लगभग ईसा मसीह का स्थान ले लिया। स्वयं यहूदी होते हुए भी यह पागल व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता पर पूर्ण रूप से हावी हो गया। यदि यह भारत में आया होता तो लोग निश्चित ही उस पागल को समुद्र में फैंक देते। पश्चिम के लोगों ने तो फ्रायड को इतनी मान्यता दी कि पश्चिमी सभ्यता आत्मघातक हो गई। सम्मान नैतिकता और आदर्श विहीन उसके विचारों को स्वीकार करने के कारण सभी माप दण्ड छिन्न-भिन्न हो गए। उसे यह मान्यता इसलिए मिली कि उसने पुस्तकों में सब लिख दिया और इन मूर्ख लोगों के लिए तो हर लिखित बात एक कानून बन जाती है। यह एक बहुत भयानक संस्कार है। जैसे बाईबल में लिखा है कि यहूदियों ने ईसा को सूली पर चढ़ाया। लोग जरा सा भी नहीं सोचते कि यहूदी तो बाहुल्य में थे। और लोगों की आम धारणा पर किसी को कैसे सूली पर चढ़ाया जा सकता

है। यह तो रोमन सरकार ही थी जिसने अपना दोष यहूदियों पर डाल दिया और ऐसा कुकृत्य केवल मिस्टर पॉल जैसे लोगों के विचारों के कारण हुआ। परन्तु लोगों ने भी इस बात को बहुत सुगमता से मान लिया क्योंकि यह उनकी यहूदियों के प्रति घृणा के अनुरूप थी। यहूदियों ने फिर फ्रायड जैसे लोगों को जन्म दिया। इस प्रकार इन संस्कारों की प्रतिक्रियाएं भी चलती रहती हैं और आपका देश अराजकता, डर, विनाश, हिंसा से भर जाता है।

अधिकार व स्वामित्व के विचार भी अपने में एक कुसंस्कार है। यह मेरी भूमि है, यह मेरी वस्तु है। यह विचार इतने प्रबल हो जाते हैं कि निराकार में विश्वास रखने वाले लोग भी जमीन जायदाद पर लड़ने लगते हैं। यह मामले कई बार तो इतने बढ़ जाते हैं कि पूरा देश ही इनकी चपेट में आ जाता है। संस्कार चाहे कैसे भी हों हमारी आंखों पर पर्दा डाल देते हैं। उदाहरण के तौर पर, मुस्लिम लोग कुरान में विश्वास रखते हैं। परन्तु कुरान पढ़ना मोहम्मद साहब ने नहीं लिखी। वो तो लिखना पढ़ना भी नहीं जानते थे। उनके 40 वर्ष बाद तो कुछ भी लिखा नहीं गया। उसके बाद एक सज्जन मुबईय्या जिसने हजरत अली, उनके बेटे दूसरे खलीफा, तथा तीसरे और फिर चौथे बेटों को स्वयं खलीफा बनने के लिए मारा और फिर उस चौथे बेटे के जिगर को इस मुबईय्या की माँ ने खा लिया क्योंकि यह व्यक्ति स्त्रियों से घृणा करता था। इसलिए उसने कुरान में सब कुछ स्त्री जाति के विरोध में लिखा हैं। और लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया क्योंकि यह सब कुरान में लिखा है। एक व्यक्ति ने कुरान का मजाक उड़ाते हुए एक पुस्तक लिखी तो मैंने पूछा "यह क्यों लिखी" तो उसने कहा कि उसका कोई विशेष प्रयोजन नहीं है। इस को पढ़कर जो लोग मुस्लिम नहीं है वे इस्लाम पर हंसेंगे और जो मुस्लिम हैं वह कहेंगे, वाह! यह बहुत सुन्दर पुस्तक है। इसमें जो कुछ भी लिखा है हम उस पर विश्वास करते हैं। मैंने उसे बताया कि इस प्रकार तो समस्या का समाधान नहीं होगा। उसने पूछा, "कैसे करें" मैंने कहा "तुम एक ऐसी पुस्तक लिखो जिसमें इन सभी मूर्खताओं पर प्रकाश डालो। मैंने कुरान के सम्बन्ध में इसलिए कहा है क्योंकि मैं जानती हूँ कि इसे मोहम्मद साहब ने नहीं लिखा। और तुम भी मोहम्मद साहब के विरोध में कुछ नहीं लिखना। वे तो दत्तात्रेय के अवतार हैं। यह सत्य है।" इसलिए आप लिख्रिए कि उन्होंने यह सब नहीं लिखा।" यह सब इन्हीं लोगों के कुसंस्कारों का परिणाम है।

ईसा मसीह के जीवन के विषय में यदि हम जान जाएं तो यह कुसंस्कार दूर किए जा सकते हैं, सर्वप्रथम वह एक अस्तबल में पैदा हुए। अस्तबल में जन्म लेने का अर्थ है अत्यन्त निर्धनता की स्थिति। इससे उन्होंने यह सिद्ध किया कि लोगों को प्रभावित करने के लिए धन-धान्य अथवा जमीन जायदाद की आवश्यकता नहीं है। उन दिनों लोग तपस्वियों का सम्मान करते थे। वह काल ही तपस्या का था। इसलिए वे अवतरित हुए और एक तपस्वी की भाँति जीवन व्यतीत किया। इसके विपरीत ईसाई लोग केवल अपनी ही सुख-सुविधाओं की चिन्ता करते हैं। किसी भी ईसाई देश में चले जाएं, आप देखेंगे कि वे लोग धन दौलत व घड़ियों के दास हैं। इनकी जीवन शैली को देख कर आप को आघात लगेगा। वे स्वयं को ईसा का अनुयायी करते हैं परन्तु चलते उनके विपरीत हैं। किसी कैथोलिक या प्रोटैस्टेंट गिरजाघर में जाकर ही आप यह जान पाएंगे। मुझे समझ नहीं आता, कैथोलिक लोग अभी तक भी धनलोलुप हैं। मसीह से उन्होंने केवल इतना ही सीखा है कि ईसा एक विवाह में गए और उन्होंने एक विशेष बर्तन (Vat) से शराब निकाली। हिब्रू भाषा में अंगूरों के रस को भी wine कहते हैं। मैंने बाईबल का हिब्रू भाषा में भी अध्ययन किया है। इसे द्राक्ष भी कहते हैं क्योंकि आप अल्कोहल को तत्काल नहीं बना सकते। उसके लिए आपको इसे सड़ाना पड़ता है। जितनी यह पुरानी होगी उतनी ही महंगी होगी। आप ही बताइऐ कि ईसा मसीह किस प्रकार ऐसी शराब (अल्कोहल) बना सकते थे? परन्तु अब तो मैं देखती हूँ कि कोई भी अवसर हो, चाहे किसी के मरने का हो या पैदा होने का, वे शैम्पेन ज़रूर पीएँगे। और क्रिसमस के अवसर पर तो विशेष रूप से, जब वे गिरजाघर से वापिस आते हैं तो आप किसी ईसाई के घर मत जाईएगा। भारतीय ईसाईयों ने भी पश्चिमी ईसाईयों का अनुसरण करना शुरू कर दिया है। क्योंकि वे मानते हैं कि ईसा तो इंगलैण्ड में पैदा हुए थे। ये सब विचार कहाँ से आए? हमारे देश में अंग्रेज, पुर्तगाली और फ्रांसिसी लोग ही ईसाई धर्म को साथ लेकर आए। क्या ये सब वास्तव में ईसाई हैं। सभी देशों में ईसाई धर्म को ले जाने का उनका क्या उद्देश्य था? स्पेन और पुर्तगाली लोगों ने तो पूरे विश्व में जाकर इसाई धर्म को फैलाया। और यह लोग केवल शराबी बन कर रह गए हैं। कल जब मैं यहाँ से जा रही थी तो देखा कि समुद्र आनन्द और खुशी की लहरों से भरा हुआ था, पानी का स्तर भी बढ़ा हुआ था। (ऐसा तो मेरे साथ अक्सर होता है) परन्तु तभी मैंने देखा चार-पांच ईसाई नशे में धुत गाते हुए चले आ रहे थे और मैंने सोचा कि ये इसी समुद्र के जल में डूब जाएँगे। शराब मानवता को ईसाई धर्म का वरदान है। यह शराब कहाँ से आई, यह तो परमात्मा ही जानते हैं। परन्तु यह ईसाईयों से अवश्य आई। मुसलमान भी शराब तो पीते हैं परन्तु छिपकर। वे खुल कर शराब नहीं पीते और न ही शराब पीने को धार्मिक कर्त्तव्य मानते हैं। गिरजाघरों में तो 'ईश्वरीय संदेश' देने के

बाद आपको थोड़ी सी, बदबूदार शराब दी जाती है। अब शराब के बाद आप 'ईश्वरीय संदेश' कैसे सम्भालेंगे? एक बार आपके शराब पीते ही सारी चेतना लुप्त हा जाती है। परन्तु यह सब होता है। इसीलिए हम आज ईसा के बारे में बात कर रहे हैं।

ईसा आज्ञा-चक्र पर विराजमान हैं और मस्तिष्क की श्लेष्मीय (Pituitary) और शंकुरूप (Pineal) ग्रन्थियों को नियंत्रित करते हैं। और इसी के द्वारा हमारे संस्कारों अथवा बन्धनों को भी नियंत्रित करते हैं। यदि आप उनका अनुसरण करें तो हम संस्कारों के बन्धन में नहीं आ सकते। क्योंकि उन्होंने केवल आत्मा के बारे में बात की है। आत्मा किसी बन्धन में नहीं फंसती जो कुछ ठीक है वह स्वीकार्य है और आत्मा के अनुकूल है। आध्यात्मिक व्यक्ति का दृष्टिकोण अलग होता है जैसे कि आप लोग हैं। मैं जानती हूँ कि इन लोगों को दूर-दूर शामियानों में ठहराया हुआ है जो कि आरामदायक नहीं है। फिर भी ये लोग मजे से हैं। इन्हें बिल्कुल परवाह नहीं है कि ये कहाँ सोते हैं, कहाँ रहते हैं, इन्हें क्या मिलता है? ये सब आध्यात्मिक माहौल का आनन्द ले रहे हैं। ये सब इसलिए सम्भव हुआ है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। और जो लोग नहीं आए वे चिन्तित हैं कि यह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं है। सभी प्रकार के भौतिक सुखों को ढूंढते हैं, सब की आलोचना करते हैं, क्योंकि उनके अन्दर आध्यात्मिक आनन्द की कमी होती है। जब तक वे पूर्ण रूप से आत्मा नहीं बन जाते तब तक वे वास्तविक आनन्द को प्राप्त कर भी नहीं सकते।

ईसा मसीह ने स्पष्ट कहा है कि आपको अपनी आत्मा को जानना है। कुरान में मोहम्मद साहब ने भी कहा है, कि जब तक आप स्वयं को नहीं जानेंगे तब तक परमात्मा को नहीं जान सकते। मुबईय्या द्वारा रचित कुरान में भी बहुत से सत्य मिलते हैं और यहूदियों की बाईबल में भी बहुत से सत्य छिपे हुए हैं। परन्तु यह सब इनके अपने भले के लिए बनाए गए विचारों, तर्कों और समायोजनों में छिपे हुए हैं। हमें यह बात समझनी है कि ईसा मसीह ने अपना कोई विशेष धर्म शुरू नहीं किया। मोहम्मद साहब ने इब्राहिम के बारे में बताया है। उन्होंने मोसिज़ ईसा मसीह और उनकी माता के बारे में बात की है और बाईबल से ज्यादा उन्हें सम्मान दिया है। उन्होंने कहा है कि पहले एक लाख से अधिक वली यानि साक्षात्कारी आत्माऐं पैदा हुई। परन्तु मुसलमान अभी भी स्वयं को विशेष लोग समझते हैं और स्वयं को मुसलमान कहते हैं, भले ही वे शराब पिऐं, लोगों को आतांकित करें, अथवा निषिद्ध वस्तुओं के पीछ भागें, फिर भी वो मुसलमान हैं, यही हाल ईसाईयों का है। एक भी वास्तविक ईसाई नहीं मिलेगा जा साक्षात्कार से पहले ईसा मसीह को ढंग से मानता हो। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात आप लोग तो विशिष्ट हो चुके हैं, परन्तु आप को भी इस आज्ञा से पार होना है और इसके लिए आप को अपने अहंकार पर नियंत्रण करना है। ईसा मसीह ने अपने जीवन काल में ही सिद्ध कर दिया कि अहंकार कैसे कार्य करता है। उनका क्रूसारोपण यह दर्शाता है कि किस प्रकार पवित्र्य के इस महान अवतरण को सूली पर चढ़ाया गया और किस प्रकार मूर्ख लोगों ने उन्हें कष्ट दिए और पीड़ित किया तथा अंत में सरकार ने उन्हें सूली पर चढ़ाया। आरम्भ में बहुत से सहजयोगी थे जो स्वयं को गूढ़ज्ञाता (gnostics) कहते थे। ज्ञा (gna) का संस्कृत में अर्थ है ज्ञान यानि जो स्वयं को जानते थे। ईसा मसीह ने कहा है कि आपको स्वयं को जानना है परन्तु स्वयं को जानने के लिए शुद्ध होनी आवश्यक है अन्यथा कोई भी आप पर जबरदस्ती नहीं कर सकता। ईसा मसीह ही अहंकार पर नियंत्रण करते हैं इसके लिए वे आप को संतुलन देते हैं। पश्चिम् में तो लोग गधे जैसा मूर्खतपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। उनके बोलने, रहन-सहन के ढंग से आँखें खुल जाती हैं। किस प्रकार विकसित हुए हैं, परमात्मा ही जानता है। आज वे अपने को सबसे अधिक विकासशील और सभ्य मानते हैं। इस प्रकार उनकी आज्ञा पकड़ी जाती है। ईसा मसीह ने अपनी लॉर्ड्स प्रेयर (Lords' Prayer) में है "हे परमात्मा, हमारे अपराधों को भी वैसे ही क्षमा करें जिस प्रकार हम अपने प्रति किए गए अपराधों के लिए अन्य लोगों को क्षमा करते हैं।"

पाश्चात्य देशों में, मैंने देखा है, कि लोग दूसरों को क्षमा करना नहीं जानते, क्योंकि उनके मन घृणा से भरे हुए हैं और अहंकार के कारण वे क्षमा माँग भी नहीं सकते। भले ही वे स्वयं को दोषी महसूस करते रहें परन्तु वे क्षमा नहीं माँगेंगे। वे कभी नहीं कहेंगे कि "हे परमात्मा मेरे अपराधों के लिए मुझे क्षमा करें" नाज़ियों ने इतने अधिक लोगों को मारा और फिर भी यह नाज़ी इटली तक चले आते हैं। वे अपने कुकृत्यों के लिए लज्जित नहीं हैं। ईसा मसीह से हमारा संबंध न होने के कारण यह सब होता है। यदि हमारा सम्बंध ईसा मसीह से है, तो सर्वप्रथम हमारा अहंकार पूर्णतया नष्ट हो जाता है। यह अहंकार, जो कई मार्गों से आता है, केवल एक भ्रांति है, एक कल्पना है। और इस अहंकार से लोग दूसरों को बेवकूफ बनाते हैं व झूठा दिखावा करते हैं। जैसा कि शेपिस्ट की कहानी से स्पष्ट होता है। वह स्वयं को बहुत बड़ा वास्तुकार समझता था। वह एक राजा के पास जाकर बोला कि "मैं आपके लिए बहुत सुन्दर महल तैयार करूँगा।" राजा उसकी बात मान गया और उसे बहुत-सी मोहरें भेजता रहा। छः महीने बाद वह शिल्पी

दुबारा राजा के पास जाकर बोला कि आप अब चलकर अपना महल देख सकते हैं। जब राजा वहाँ पहुँचा तो वह दंग रह गया, क्योंकि वहाँ तो खाली जमीन पड़ी थी। राजा समझ गया कि उसे बेवकूफ बनाया गया है। और शिल्पकार कल्पना में ही कहने लगा कि यह वह सड़क है जो महल को जाती है। वह सामने आपका महल एवं राजगद्दी है। कृपया आप इस में पधारिए। राजा ने शिल्पी की चालाकी को समझते हुए कहा कि पहले आप बैठिए और 2 घंटे तक उस चालाक शेपिस्ट को नुकीले पत्थर पर बैठाए रखा। अँत: में वह शिल्पकार राजा के चरणों में गिर पड़ा। राजा ने उसे गिरफ्तार करवा दिया, खूब पिटवाया और कई तरह की यातनाऐं दीं। अहंकार मूर्खता को शिखर पर ले जाता है। वह संस्कृति जो अहंकार को प्रोत्साहित करती है, सबसे बुरी है। अधिकतर विज्ञापन भी हमारे अहंकार को प्रगट करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार, अहंकार को व्यक्त करना मूर्खता का प्रतीक माना जाता है। लोग उस पर हँसते हैं और मज़ाक करते हैं। मराठी में तो यदि कोई अपना घमंड दिखा रहा हो, तो कहा जाता है कि चनों के झाड़ पर चढ़ रहा है। भारत में पूरी व्यवस्था ही ऐसी है कि कोई अपना अहंकार विकसित नहीं करता। जो भी ऐसा करता है, शीघ्र ही उसकी हवा निकाल दी जाती है। परन्तु उत्तरी भारत में अवश्य अंहकार को थोड़ा बढ़ावा दिया जाता है। लोग ऊँची-ऊँची बातें करते हैं, स्वयं को बड़े-बड़े नेता मानते हैं और कहते हैं कि हम यह करेंगे, वह करेंगे आदि। यह लोग बड़े-बड़े राजनेता होते हैं और बड़े-बड़े अनुसंधानों को करने की घोषणाऐं करते रहते हैं। परन्तु ईसा मसीह ने इस प्रकार की कोई भी बात नहीं कही। उनके धर्मोपदेश मि॰ पॉल के नकारात्मक प्रयासों के बावजूद इतने गहरे और ज्ञानमय हैं।

ईसा मसीह ने लोगों से बातचीत की उन्हें कई प्रकार के तरीके सुझाए। और बताया कि आत्म-ज्ञान के बाद क्या होता है? कैसे बीज प्रसफुटित होता है? और कैसे यह दूषित हो जाता है? इन सब का उन्होंने बड़े सुन्दर ढंग से विवरण दिया है। उनका जीवन बहुत सौम्य और आर्कषक था। वे धरती पर एक पुच्छल तारे की भांति आए और लोगों के दिलों पर गहन प्रभाव छोड़ गए। उनका सूली पर चढ़ना भी इस लीला का एक अंश था क्योंकि उन्होंने आज्ञा में अपना स्थान बनाना था। आज्ञा चक्र को पार करने के लिए ही उन्हें सूली पर चढ़ाया गया। परन्तु उनका सन्देश सूली में नहीं है। इसलिए जब लोग क्रॉस (Cross) पहनते हैं तो मुझे बहुत दु:ख होता है। उनका सूली पर चढ़ना तो कोई उत्सव मनाने की बात नहीं है, परन्तु कई लोग इसे भी मनाते हैं। हमें तो उनके पुनरुत्थान को मनाना चाहिए।

पुनरुत्थान को इसलिए मनाना चाहिए क्योंकि सभी मनुष्यों का पुनर्जन्म होना है। सहज योग में किसी को सूली पर नहीं चढ़ाया जाता। सब का पुनर्जन्म होना है क्योंकि ईसा मसीह का सूली पर चढ़ना ही पर्याप्त था। हमें अपने कंधों पर क्रॉस को नहीं उठाना है। ईसा ने हमारे लिए सब कुछ कर दिया था। यह बात भी सत्य है कि उन्होंने कहा कि वे सभी पापियों के लिए मरे। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो आज अहंकार एवं कुसंस्कारों के कारण आपके आज्ञा चक्र को खोलना कठिन होता। उनकी सूली ने मनुष्यों की इन दो भयानक ग्रन्थियों को ढीला कर दिया। हमें उनके बीवन को बड़ी गहनता से समझना है। परन्तु यदि आप पत्रकार हैं; तो आप उनके सूली पर चढ़ने का कारण पूछेंगे। यदि वे ईश्वर थे, तो वे स्वयं सूली पर क्यों चढ़े? एक पत्रकार जिसे कि चक्रों के बारे में कुछ भी नहीं मालूम, उसे यह समझाना बहुत कठिन है कि ईसा मसीह सूली पर क्यों चढ़े। क्योंकि वह तपस्या एवं बलिदान का युग था इसलिए तीनों महापुरुषों–बुद्ध, महावीर और ईसा मसीह–ने पूर्ण वैराग्य प्राप्त किया। और तपस्वियों का जीवन व्यतीत किया। उन्होंने यह सब हमारे लिए किया, अपने लिए नहीं। उन्हें इसकी कोई इच्छा या आवश्यकता नहीं थी। हमें पवित्र करने और वांछित मेधा प्रदान करने के लिए उन्हें सूली पर चढ़ना पड़ा। लोग इसे एकादश रुद्र भी कहते हैं। इसको शुद्ध करने के लिए उन्होंने अपने जीवन के सुखों का त्याग किया। उनके लिए यह बलिदान नहीं था, लोगों के चक्रों को खोलने के लिए उन्होंने ऐसा किया। उनके बिना भविष्य में सहजयोग को कार्यान्वित करना बहुत कठिन होता। इन तीनों महापुरुषों ने हमारे इस चक्र को शुद्ध करने का कार्य किया और परिणामस्वरूप सहजयोग इतने सुन्दर ढंग से निर्मित हुआ है और इतने सुन्दर ढंग से फैल रहा है तथा कार्यान्वित हो रहा है। इन तीनों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। हालाँकि दूसरे अवतरणों ने भी योगदान दिया है जैसा कि हम विशुद्धि पर, हृदय पर, दायें-बायें हृदय पर देखते हैं। ये सभी देवदूत, जैसा कि इन्हें बाईबल में कहा जाता है, हमें पार होने में सहायता करते है। सभी अवतरणों ने हमारे आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया में सीढ़ियाँ तैयार की है; और अन्त में तप की अवस्था में छठे चक्र को पार करते हुए हम सत्य की अवस्था में पहुंचते हैं। यह सत्य हमारे मस्तिष्क के तालू भाग में सहजयोग द्वारा आता है। जब कुण्डलिनी सहस्रार में प्रवेश करती है तो वहाँ चारों ओर प्रकाश देती है और एक प्रकाशमय व्यक्तित्व का निर्माण करती है। तब यह परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति में मिल जाती है। इसी दिव्य प्रेम से आप पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाते हैं। इसलिए इनका मनुष्य के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान है। ईसा मसीह का

योगदान सबसे बड़ा है। जब हम कहते हैं कि हमें ईसा मसीह का अनुसरण करना है तो हमें देखना चाहिए कि हम कितने निरासक्त बन चुके हैं। लोग कहते हैं कि ईसा मसीह के भाई-बहन भी थे और वे उन्हें मिलने भी आए। परन्तु ईसा मसीह ने कहा "कौन मेरे भाई हैं? ये ज्ञानी-जन मेरे भाई हैं, शिष्य हैं, और यही मेरे रिश्तेदार हैं।" ज्ञानेश्वर ने भी यही बात कही कि साक्षात्कारी लोग ही तुम्हारे भाई बहन एवं रिश्तेदार बनेंगे। वे रिश्तेदार जो हमें समझ नहीं सकते और जिन्होंने परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश नहीं किया, हमारे रिश्तेदार नहीं हो सकते। अपने जीवन काल में ईसा मसीह ने बहुत ही साधारण जीवन व्यतीत किया। कभी कपड़ों, सांसारिक बन्धनों या वस्तुओं की चिन्ता नहीं की। पर इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने किसी प्रकार की नग्नता स्वीकार की। लोगों को महावीर के बारे में भी गलत धारणा है। एक बार महावीर एक उद्यान में प्रार्थना कर रहे थे। उस बगीचे में बहुत सी कंटीली झाड़ियां थीं। एक झाड़ी में उनका कपड़ा उलझ गया। उन्होंने उस कपड़े को आधा फाड़ दिया। इतने में श्री कृष्ण उनकी परीक्षा के लेने के लिए प्रकट हो कर बोले। "मैं बिल्कुल वस्त्रहीन हूँ, मुझे अपना कोई वस्त्र दे दीजिए। आप तो एक राजा हैं" महावीर जी ने अपना वस्त्र उतारकर श्री कृष्ण को दे दिया और स्वयं को पत्तों से ढककर अपने महल में चले गए। परन्तु आजकल जैन धर्म के लोगों ने यह सब बहुत भयंकर रूप में पेश किया है और हर समय महावीर जी का निरादर करते हैं। वे इस महान अवतरण का अनुसरण न करके इनका अपमान करते हैं। अभी हाल ही में मैं एक ऐसे व्यक्ति से शिकागो में मिली जो "हरे रामा, हरे कृष्णा" समुदाय का मुखिया था और अत्यन्त ठंड में एक पतली धोती पहनकर काँप रहा था। जब मैंने उससे इस मूर्खता का कारण पूछा तो वह बोला कि "मेरे गुरु ने कहा है कि यदि तुम पतली धोती पहनोगे तो स्वर्ग को जाओगे"। मैंने कहा "भारत में 80% लोग धोती पहनते हैं, क्या वे सभी स्वर्ग को जा रहे हैं?" मैंने उससे उसके बाल मुंडवाने का कारण पूछा और पूछा कि यह शैंडी या भेंडी जो भी इसे कहते हो, यह क्यों रखी हुई है? तो वह बोला ऐसा करने को मेरे गुरु ने कहा है। तब मैंने सोचा कि उसका गुरु उसे चोटी से बांधकर स्वर्ग में ऊपर खींच लेगा।

कबीर उन सन्तों में से एक है जिन्होंने आपके कुसंस्कारों पर चोट की है। उन्होंने कहा है कि यदि सिर मुंडवाने से स्वर्ग मिलता तो साल में दो बार मूंडा जाने वाला मेमना आप से पहले स्वर्ग पहुँचता। यह सत्य है। परन्तु जैन साधु बिल्कुल नंगे रहते है। और स्वयं अपने बाल उखाड़ते हैं। कानून भी उन्हें गलियों मे नंगे घूमने और सबका अपमान करने की आज्ञा देता है। बुद्ध, महावीर तथा ईसा के नाम पर यह सब मूर्खताएं की जा रही है। ये अवतरण तो हमें तर्कवाद, सीमाओं तथा बन्धनों से ऊपर उठाने के लिए प्रयत्नशील हैं। हमें इनसे ऊपर उठना है क्योंकि सोच-विचार से तो हम एक रेखीय दिशा में चल पड़ते हैं जहां सत्य नहीं है। इन सभी चीज़ों का दुष्प्रभाव आप पर पड़ता है और आपको कहीं का नहीं छोड़ता। **आप समझ लें कि आपको मस्तिष्क से ऊपर उठना है। ऐसा करना यदि आप नहीं जानते तो बेहतर होगा कि बैठकर ध्यान-धारणा करें और यह स्थिति प्राप्त करें।** मस्तिष्क तो घृणा, क्रोध और ईर्ष्या का दाता है। तर्क एवं विचार हमारे षड-रिपुओं के स्रोत हैं। मन हर गलत कार्य को करके उसका तर्क भी देता है, मन के ही कारण हम सब गलत कार्यों एवं पापों को करना आरम्भ कर देता है। फिर उसका तर्क भी देते हैं। आज्ञा के विरुद्ध जाने का अर्थ है सत्य के विरुद्ध जाना और उसे तर्क संगत ठहराने के लिए अपने अंहकार व कुसंस्कारों का उपयोग करना। ऐसा करते हुए हम कभी भी मन से ऊपर नहीं उठ सकते। हम इतने आत्म-सन्तुष्ट हैं कि स्वयं को शाश्वत मान बैठते हैं। केवल अन्तर्दर्शन से ही हम इससे मुक्ति पा सकते है, परन्तु अन्तर्दर्शन अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा करने से ही आज्ञा चक्र की यह दोनों बाधाएं दूर हो सकती हैं। मैंने आपको कई बार बताया है कि किसी भी अहँग्रस्त व्यक्ति से बहस न करें। अहँ से क्रिया-प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है और हम प्रतिक्रिया करने लगते हैं। पश्चिम के लोगों में प्रतिक्रिया करने की बहुत आदत है। जिस भी चीज को वे देखते हैं उसकी आलोचना करने से नहीं चूकते। आप अपनी आलोचना क्यों नहीं करते? आलोचना के स्थान पर हम उसके सुधार के लिए क्यों नहीं कुछ करते? परन्तु हममें तो प्रतिक्रिया करने की बहुत बुरी आदत पड़ गई है और ऐसा करना हम अपना अधिकार मान बैठे हैं। आपका यह अधिकार आत्म घातक है। प्रतिक्रिया करना गलत है। साक्षी रूप से आप सभी कुछ देखिए। एक बार साक्षी रूप से जब आप देखने लगेंगे तो आप हैरान होंगे कि आप माया का खेल देखने लगे और इसमें अपना स्थान भी आप देख पाएंगे।

हमें साक्षी भाव विकसित करना है। हर साक्षी भाव से देखें। क्या मैं साक्षी हूँ? कुछ लोग कहते हैं कि सदा साक्षी रूप से देखने के कारण मेरी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है। तस्वीर की तरह इसमें सभी कुछ छपा है। जब भी मुझे कुछ कहना या किसी को सुधारना होता है तो मेरी समरण शक्ति सहायक होती है। सर्वप्रथम तो हमें किसी भी चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करनी। कुछ लोग धनासक्त होते हैं, वे कुछ भी नहीं देते, सारा पैसा वे अपने पास रखते हैं। सहजयोग में भी इस प्रकार के लोग देखे गए हैं, और कुछ ऐसे हैं जो दूसरों को खुश करने के लिए बेकार ही खुले रूप से धन

खर्च डालते हैं। इस प्रकार पैसा बरबाद करना भी ठीक नहीं। प्रतिक्रिया तो किसी भी रूप में हो सकती है कभी-कभी तो यह विदित ही नहीं होता कि हम अपनी मानसिक शक्ति बेकार खर्च कर रहे हैं। वास्तव में हम प्रतिक्रिया तब करते हैं, जब हमारी निर्णय शक्ति पूर्णतया नष्ट हो जाती है और हमें मालूम नहीं होता कि इस प्रकार की प्रतिक्रिया करने से क्या खो रहे हैं और क्या पा रहे हैं व इस प्रकार की प्रतिक्रिया हमें आंतरिक रूप से पूर्णतया नष्ट कर डालेगी। यदि आप में दूसरों की आलोचना की आदत है तो इसे पूर्ण रूप से त्याग दीजिए। अपनी इस शक्ति को अन्तरमुखी बना लीजिए और स्वयं की आलोचना कीजिए। अपने को प्रतिक्रिया करने के लिए चेतावनी दीजिए। तभी आप देखेंगे कि आप का अहंकार धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। एक बार एक व्यक्ति मेरे पास आकर कहने लगा, माँ मुझे इतना गुस्सा आता है कि दिल करता है सबकी पिटाई कर दूँ। तब मैंने उससे कहा कि "चप्पल उठाकर अपने सिर को पीट लो", इसी से वह सुधर गया है।

आप ने अपने बन्धनों को भी देखना है और स्वयं से पूछना है कि क्या मैं बन्धनों में फंसा हुआ हूँ? मेरे संस्कार अच्छे हैं या बुरे? संस्कार यदि सीमा से आगे बढ़ेंगे तो अपने तथा दूसरों के लिए समस्या उत्पन्न कर देंगें। सब रीति रिवाज़ आदि एक अच्छे संस्कार के रूप में शुरू होते हैं। पर धीरे-धीर लोग उन में जकड़ जाते हैं। ये हमारा एक अभिन्न अंग बन जाते हैं। तब हमें क्या करना चाहिए? ऐसी स्थिति में हमें कोई प्रतिक्रिया न करते हुए सब चीज़ों को एक नाटक के रूप में देखना है। तब, आप आश्चर्य चकित होंगे कि, बिना कुछ खर्च किए बिना मंच पर गए आप प्रतिपल अपने सामने वाले नाटक का आनन्द ले रहे हैं, भले ही वह बेतुका अर्थहीन अथवा हास्यापद हो। फिल्म के दृष्य की तरह आप इसे देखते हैं, बिना प्रतिक्रिया किए। किसी भी चरित्रहीन, भद्दी चीज़ को देखने की कोई ज़रूरत नहीं। अपने मन को उलझने मत दीजिए। जिसे आप मन कहते है वह आप के दृक-तन्त्रिका के मध्य भाग में स्थित आज्ञा चक्र है। आप देखते है कि यही चक्र आपके मस्तिष्क को बहुत सूक्ष्म रूप से प्रभावित करता है और किस प्रकार आप के अंदर दूषित चित्र निर्मित करता है। जिन लोगों में बन्धन ज्यादा होते है वे लोग मानसिक तौर पर परेशान व भ्रष्ट होते हैं।

ईसा मसीह का शुद्ध स्वभाव पावित्र्य है। वे साक्षात् श्री गणेश है और श्री गणेश एक सनातन, अनन्त बालक है। ईसा मसीह पूर्णतया अबोध है क्योंकि बन्धन मुक्त होने के कारण वे बिल्कुल प्रतिक्रिया नहीं करते और न ही वे किसी प्रकार बन्धनों में फंसते हैं। बच्चे हमारी अपेक्षा कम प्रतिबंधित होते हैं। बच्चों से बात करने में आनन्द आता है क्योंकि वे भोले हैं। एक बार मेरी नातिन ने मुझ से पूछा–"माँ, आप शेर के निरीह बच्चों के बारे में क्या सोचती हैं?" मैंने जब इसका कारण पूछा तो कहने लगी कि "उनके पिता तो उन्हें मनुष्यों को खाने के लिए कहते हैं और उन्हें ऐसा करना पड़ता है। वे इतने अबोध होते है।" तब मैंने उसे समझाया कि वे परमात्मा के पाश में बंधे होते हैं अत: जो भी कुछ वे करते हैं उसके लिए वे जिम्मेवार नहीं होते। केवल मनुष्यों को ही परमात्मा ने स्वतंत्रता दी है। केवल मानव ही इस प्रकार प्रतिक्रिया कर सकते हैं। सभी पशु ईश्वर के पाश में होने के कारण अपने स्वभाव अनुसार ही व्यापार करते हैं, साँप-साँप की तरह करता है और शेर-शेर की तरह। परन्तु मानव एक ही समय में साँप, बिच्छु या शेर कुछ भी हो सकता है। और यह खटमल जैसा तुच्छ मानव अप्रत्याशित रूप से प्रतिक्रिया करता है। मनुष्य प्रतिक्रिया तभी करता है जब उसका परमात्मा से संबंध-विच्छेद हो जाता है। परमात्मा से जुड़े हुए व्यक्ति को सांसारिक कार्या-कलाप नाटक सम लगते हैं और सभी कुछ परमात्मा पर छोड़ देता है। मात्र एक बन्धन से वह अपनी सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है परन्तु इसके लिए उसका पूर्ण रूपेण परमात्मा से जुड़ा होना आवश्यक है। यह निश्चित रूप से कार्य करेंगा। यह वह समय है जब परम चैतन्य पूर्ण रूप से कार्यशील है। लोगों ने मुझसे श्री गणेश के बारे में पूछा कि क्या उन्होंने दूध पिया। तो मैंने कहा–"कि इस समय परम चैतन्य कुछ भी चमत्कार कर सकता है। सब कुछ संभव है, परन्तु मैंने श्री गणेश का इतना दूध पीते पहले नहीं देखा। हो सकता है कि छोटे चूहे के लिए ऐसा किया हो। तब उन्होंने पूछा कि शिव जी ने दूध क्यों पिया? तो मैंने कहा कि यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। यदि वे दूध पीना चाहते हैं तो उन्हें पीने दीजिए। वास्तव में हमारे देश में दूध पर्याप्त मात्रा में होता है, अत: उन्हें पीने दीजिए सब कार्य परम चैतन्य द्वारा हो रहा है, मैं उन्हें कुछ करने को नहीं कहती और वे इतने सुंदर चमत्कारिक कार्य कर रहे हैं। मैं ब्रिसबेन में आश्रम में सोई हुई थी। अकस्मात आकाश में इन्द्र धनुष प्रकट हुआ और साथ ही माँ और बच्चे की एक आकृति दिखाई दी। निसन्देह मुझे माँ और बच्चे की आकृति के चित्र बहुत अच्छे लगते हैं। मैं तो सोई हुई थी अत: मैंने यह सब देखने की इच्छा नहीं की थी। मेरी के सिर के चारो ओर प्रभा मण्डल का बनना भी परम चैतन्य का चमत्कार था। परम चैतन्य यह सब कार्य आप को सहजयोग की प्रतीति करवाने के लिए करते हैं। क्योंकि अभी भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो कि बुद्धिजीवी हैं, पढ़े लिखे हैं, तर्क करते हैं और कुछ भी स्वीकार करना नहीं चाहते।

जब यह दिव्य-शक्ति है और पूर्ण रूप से कार्यशील है तो आप इसे किस प्रकार चुनौती दे सकते हैं? यह शक्ति असीमित है तथा हर अणु-रेणु में समा चुकी है। यह परम चैतन्य वस्तुओं को इधर से उधर करने का कार्य तो नहीं करता पर यह सर्वथा असम्भव कार्य करता है ताकि हम इस पर विश्वास कर सकें। कार्यान्वित परम चैतन्य ही एकमात्र समाधान है। आप सब कुछ इस शक्ति-सागर पर छोड़ दीजिए। यह सभी स्थितियों को सम्भाल लेगा। आप को प्रतिक्रिया करने की कोई आवश्यकता नहीं। परम चैतन्य बहुत कार्यकुशल तीक्ष्ण तथा सर्वव्यापक है, सभी कुछ समझता है। यह आपके पास आता है, आप का मान करता है क्योंकि आप सहजयोगी हैं।

क्रिसमस पर्व मानते हुए आज हमें ध्यान रखना है कि हम वास्तव में अपने उत्थान, उपलब्धियों, उन परम उंचाइयों को मना रहे हैं। जिन्हें हम पा चुके हैं और जिन्हें हमने पाना है। हमारी इच्छाएं केवल अध्यात्मिक होनी चाहिए जो कि परम चैतन्य को समर्पित हों। जितना अधिक हमारा समर्पण होगा। उतने ही हम विकसित होंगे।

यह प्रतिक्रिया विहीन दृष्टिकोण आपकी सन्तुलित 'आज्ञा' से आना चाहिए, क्रोध या मौन से नहीं। अत्यन्त शान्त स्वभाव से आना चाहिए। लोग समझते हैं कि मैंने आपको मौन रहने के लिए कहा है। नहीं, आपको सब से हँसना-बोलना है, आनन्द लेना है। आनन्द से परिपूर्ण भाव से यह सब करना है। कहा जाता है कि क्रिसमस आनन्दमय वातावरण में मनाया जाना चाहिए। आनन्द किसी अन्य प्रकार से न पा सकने के कारण लोग शराब पीते हैं। वे समझते हैं कि शराब उन्हें आनन्द प्रदान करेगा।

हमें स्वयं को स्पष्ट रूप से समझना है। कुछ लोग बिल्कुल भी ध्यान नहीं करते और न ही वे आगे बढ़ना चाहते हैं। यह बहुत आश्चर्य जनक है। मैं सब जान जाती हूँ कि कौन ध्यान करता है और कौन नहीं। ऐसे लोग जो ध्यान करता है और कौन नहीं। ऐसे लोग जो ध्यान नहीं करते वे सहजयोग से सभी लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। यदि आप ध्यान नहीं करेंगे तो आपकी आज्ञा विचारों से आच्छादित रहेगी और आप खो जाएँगे। आपके ध्यान न करने के कारण मुझे भी कष्ट उठाना पड़ता है। यदि सहजयोग में आपकी कोई आकांक्षाएँ नहीं हैं तो आप सहजयोग छोड़ दीजिए। आपकी स्थिति उस बीज की भांति हैं जो अंकुरित तो हो चुका है परन्तु व्यर्थ जा रहा है। कुछ लोग सहजयोग में केवल इसलिए है क्योंकि वे लोकप्रियता व प्रचार के लिए एक मंच चाहते हैं, कुछ लोग सहजयोग से धन कमाना चाहते हैं और कुछ एक भी पैसा खर्च किए बिना सम्पर्क बनाने के लिए विश्वभ्रमण करना चाहते हैं। ऐसे सभी लोग बेकार है। और परमात्मा तुम्हें सम्पूर्ण दिव्य निधि प्रदान कर रहे हैं तथा आप उसे लेना नहीं चाहते। आप इसमें डूबना नहीं चाहते। आप को इसके लिए न तो सूली पर चढ़ना, न कोई त्याग करना है और न ही ईसा मसीह की तरह निर्धनता का जीवन यापन करना है। यह सब तो उन्होंने स्वयं आपके लिए कर दिया। इसलिए अब तो केवल आ जाईए। यदि आप परमात्मा के दरबार में आ रहे हैं तो इस के योग्य बन जाइए। इसके योग्य बन जाइए और देखिए कि आप की समस्त समस्याओं का निदान हो जाएगा। आपका आत्मा-सम्मान बना रहेगा। बिना आत्म-सम्मान के आप अपने आत्मज्ञान का भी मान नहीं कर पाएँगे। जब तक आप स्वयं के उत्थान में गहराई से नहीं डूबेंगे और दूसरों की सहायता नहीं करेंगे तो यह कार्यान्वित नहीं होगा। मैं आपको वे सभी बातें बताने और पूर्ण करने के लिए आई हूँ जो ईसा मसीह नहीं बता पाए। इसलिए मैं तुम्हें बता रही हूँ कि अब आपको आत्म साक्षात्कार मिल गया है। सहजयोगी के रूप में अपना सम्मान विकसित कीजिए। अपने बारे में कुछ भी मिथ्या नहीं सोचिए। केवल इतना जान लीजिए कि आप एक सहजयोगी अथवा सहजयोगिनी हैं। ईसा मसीह का जन्म दिवस मानते हुए प्रत्येक व्यक्ति को यही जान लेना आवश्यक है। वे इस धरती पर अबोधिता के प्रतीक व श्री गणेश के समरूप बन कर इस धरती पर आए। मैंने आपको इस का प्रमाण भी दिखा दिया है कि किस प्रकार कार्बन के अणु दिखाई देते हैं। इस के द्वारा मैंने यह सिद्ध कर दिया है कि ईसा मसीह ही अल्फा और ओमेगा (Alfa & Omega) हैं तथा वे ओंकार तथा स्वास्तिक से बने हैं। यह सब हमने वैज्ञानिक विधि से प्रमाणित करके दिखा दिया है। इसलिए अपनी अबोधिता व पवित्रता का मान ही आपकी सब से बड़ी उपलब्धि है। आज मुझे आपसे इतना ही कहना है कि भोले बन जाईए, परमात्मा भोले व अबोध लोगों की देखभाल करते हैं। आप कोई भी प्रतिक्रिया नहीं कीजिए, कोई भी चिन्ता नहीं कीजिए। मैंने बच्चों को सात मंजिल से गिरते हुए देखा है और उन्हे बिल्कुल भी चोट नहीं लगी। उन्हें कौन देखता है? उनका ध्यान स्वयं देवता लोग करते हैं। आपने मेरे चारों ओर देवताओं के चित्र देखे हैं। इसलिए आप भी सीधे अबोध बालक बन जाईए, प्रतिक्रिया विहीन, शान्त रहिए, क्योंकि हम पूरे विश्व के उस परिवर्तन की बात कर रहे हैं जहाँ लोगों के हृदय शान्त होंगे और हम शान्ति आनन्द व आध्यात्मिकता के एक नए विश्व की स्थापना करेंगे।

परमात्मा आप सब को आशीर्वादित करें।

ईस्टरपूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कलकत्ता–14.4.96

आज हम लोग ईस्टर की पूजा कर रहे हैं। सहजयोगियों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि ईसा मसीह ने दिखा दिया कि मानव का उत्थान हो सकता है और उस उत्थान के लिए हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए। जो उनको क्रूस पर चढ़ाया गया उसमें भी एक बहुत बड़ा अर्थ है। क्रूस पर टांग कर उन की हत्या की गई और क्रूस आज्ञा चक्र पर एक स्वास्तिक का ही स्वरूप है। उसी पर टांग कर के और ईसा मसीह वहीं पे गत-प्राण हुए। उस वक्त उन्होंने जो बातें कहीं, उनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी कि उन्होंन कहा कि माँ का इन्तजार करो। माँ की ओर नजर करो। इस का अर्थ कोई कुछ भी लगाए पर दिखाई देता है कि उन्होंने ये बात कही कि मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी शक्ति भेजूंगा जिसके तीन अंग होंगे, जो त्रिगुणात्मिका होगी। और उस का वर्णन बहुत सुन्दरता से किया है कि एक शक्ति होगी जो आप को आराम देगी। आराम देने वाली शक्ति जो हमारे अन्दर है, वह है महाकाली की शक्ति, जिससे हमें आराम मिलता है, जिससे हमारी बिमारियाँ ठीक होती हैं, जिससे हमारे अनेक प्रश्न, जो भूतकाल के हैं, ठीक हो जाते हैं। दूसरी शक्ति जो उन्होंने भेजी, वह थी, महासरस्वती की शक्ति। महासरस्वती की शक्ति को उन्होंने काऊंसलर (Counsellor) कहा। यह आप को समझाएगी, आपको उपदेश देगी, योग निरुपण करेगी। इस दूसरी शक्ति से हम ज्ञान-सूक्ष्म ज्ञान-को प्राप्त करेंगे। और तीसरी शक्ति महालक्ष्मी की। जिससे कि हम अपने उत्थान को प्राप्त होंगे। इस प्रकार तीन शक्तियों की उन्होंने बात की थी।

बुद्ध ने भी कहा था कि मैं तुम्हें "मात्रेया" दूंगा यानि तीन तरह की माता या माताएँ। लोगों को समझ ही नहीं आया कि "मात्रेया" क्या होता है, इसलिए उन्होंने "मैत्रया" कर दिया। यह जो "मात्रेया" थी, यह एक साथ आदिशक्ति में ही हो सकती थी और आदिशक्ति को उन्होंने कहा तो ज़रूर होगा "Premordial Mother" पर जिन्होंने बाईबल को ठीक किया, उन्होंने उसे "होली घोस्ट" (Holy Ghost) बना दिया और उसकी जगह कबूतर बना दिया। क्योंकि जिन्होंने बाईबल को ठीक किया उन्हें स्त्री जाति से बहुत नफरत थी और वे विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि एक स्त्री भी ऐसा ऊँचा कार्य कर सकती है! उस नफरत के कारण उन्होंने उस का रूप अजीब सा बना दिया–Holy Ghost यानि कि एक कबूतर। कबूतर का अर्थ है कि वह एक 'शान्ति का दूत' होता है। स्त्री की बात ही नहीं की। अपने शास्त्रों मे कहा गया है "सहस्रारे महामाया"। तो वो महामाया स्वरूप होंगी। लोग उन्हें पहचान नहीं पाएँगे। पहचानने के लिए भी आपको आत्म साक्षात्कार लेना पड़ेगा। यदि आप ने आत्म-साक्षात्कार नहीं लिया तो आप पहचान ही नहीं सकते। अपने जीवन ही में उन्होंने जितना खुलकर कह सकते थे, कहा। पर न जाने इन्होंने कितनी बातें बताईं और कितनी नहीं बताई और छिपाई।

सहयोग के लिए ईसा मसीह का आना बहुत ज़रूरी था। वो स्वयं एक चिर बालक है। यह तो अब सिद्ध हो गया है कि वे गणेश का अवतरण हैं। गणेश का अवतरण संसार में एक ही बार हुआ और वह है ईसा मसीह के रूप में। इन तीनों का कार्य–जिसे हम कह सकते हैं बुद्ध, महावीर और ईसा मसीह–जिस स्तर पर हुआ वह स्तर तपस्या का है। इसलिए **विराट पर** इन्होंने कार्य किया। तीनों के कार्य में तपस्या का महत्त्व है, कि मनुष्य को तपस्या करनी चाहिए। तपस्या करके ही वह आज्ञा चक्र को भेद सकता और बाहर जा सकता है। आज्ञा चक्र का भेदन होना अति आवश्यक था क्योंकि उस के बिना आपकी कुण्डलिनी ऊपर उठ ही नहीं सकती थी। आज्ञा चक्र का भेदन ईसा मसीह के पुनर्जन्म (Resurrection) से हुआ। उनकी मृत्यु हुई और फिर उनका पुनर्जन्म हुआ। अत: हम लोगों के लिए एक बड़ा भारी संदेश है ईस्टर में, कि ईसा मसीह के उत्थान से ही हम लोगों ने इस उत्थान को प्राप्त किया। सबसे कठिन चक्र है इन्सान में मनुष्य में–आज्ञा चक्र क्योंकि मनुष्य हर समय सोचता ही रहता है और सोच-सोच कर उसके सिर की एक मन के बुलबुले की सी स्थिति बन जाती है। वह विचारों से परे नहीं जा सकता। जब आज्ञा का भेदन होता

है तभी आप विचारों से दूर जा पाते हैं। इसलिए यह कहना चाहिए कि यदि ईसा मसीह ने अपने प्राण देकर के आज्ञा से उत्थान नहीं किया होता तो सहजयोग मुश्किल हो जाता। कार्य तो सभी अवतरणों ने किया अपनी-अपनी जगह, अपने-अपने समय, अपने-अपने स्थान पर। परन्तु जो कार्य ईसा मसीह के उत्थान से हुआ वह बहुत ही कमाल की चीज़ थी। इसलिए आज्ञा का भेदन बहुत मुश्किल कार्य था। आज्ञा से ऊपर उठाना कोई मुश्किल कार्य नहीं। जितने भी गुरु हो गए बड़े-बड़े, उन्होंने बहुत कार्य किए। उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें करीं कि जिसके कारण लोगों में जागृति हुई, धर्म के प्रति रुचि हुई व आत्मसाक्षात्कार की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। ईसा इस देश में आए क्योंकि वहाँ के लोगों, जहाँ से वो आए थे, की दृष्टि में सूक्ष्मता नहीं थी। आध्यात्म नहीं था। इसलिए वे हिन्दुस्तान में आए और काश्मीर में वे शालीवाहन राजा से मिले। शालीवाहन ने उनसे पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है?" उन्होंने कहा, "मेरा नाम ईसा मसीह है।" मसीह यानि जो सन्देश लेकर आता है। और मैं उस देश से आ रहा हूँ जहाँ सभी मलेच्छ रहते हैं। मलेच्छ यानि जिन्हें मल की इच्छा होती है। आप देखते है कि जितने भी ये विदेशी होते हैं उन्हें मल की ही इच्छा रहती है, सिर्फ पागलपन ही अच्छा लगता है। आप उनकी फिल्में देखिए तो सोचेंगे, क्या ये लोग पागल हैं? हमारे देश में इन लोगों को पहले मलेच्छ कहते थे यानि मल की इच्छा करने वाले मलेच्छ। ईसा ने कहा उन को तो मल की इच्छा है और मैं वहाँ कहाँ जाऊँ, मुझे तो आध्यात्म को जानना है। तो शालीवाहन ने कहा, आप तो पहुंचे हुए हैं। आप अपने ही देश में लोगों को 'निर्मल तत्वम्' यानि Principle of Purity लोगों को सिखाएँ। बहुत ज़रूरी है, यदि आपने लोगों को निर्मल तत्वम् सिखा दिया तो लोग मलेच्छपन से छुटकारा पा जाएँगे। ईसा वापिस गए और किसी तरह 3½ वर्ष तक रहे और फिर उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया। जिस शान से उन्होंने प्राण त्यागे, उससे जाहिर होता है कि उनका अद्‌भुत व्यक्तित्व था और मात्र 3½ साल के थोड़े से समय में उन्होंने अपने जीवन में जो कार्य किए हैं वह बहुत महान थे। हालांकि उन्होंने किसी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया, क्योंकि उस समय सत्य को खोजने वाले लोग नहीं थे जैसे आज हैं, मेरे नसीब अच्छे हैं। इसलिए जो कार्य हुआ वह आत्मसाक्षात्कार से पहले का कार्य था। यानि लोगों ने जाना कि इस मनुष्य जीवन से परे भी कोई और जीवन है। उन्होंने कहा कि तुम्हे फिर से जन्म लेना होगा। उनका उत्थान फिर से जन्म लेना ही है। और अपने यहाँ भी कहते हैं कि जिस प्रकार अंडे से पक्षी जन्म लेता है, उसी प्रकार जब दूसरा जन्म होता है तो उसे द्विज कहना चाहिए, जिसका अर्थ दूसरी बार है। और जब उसका परिवर्तन हो जाता है पूरी तरह से तो उसमें पूर्णतया शक्ति आ जाती है। उस के पास सारी संचार शक्ति आ जाती है। आपको तो मालूम है कि साईबेरिया से उड़कर के कैसे पक्षी हिन्दुस्तान में आ जाते हैं। जाड़े में यहाँ आते हैं और गर्मियों में वहाँ चले जाते हैं। न उनके पास कोई राडार है न एयरोप्लेन है। वे हर साल उसी तालाब पर आते हैं जहाँ पहले आते थे। एक बार एक प्रयोग किया। पक्षियों के कुछ बच्चों को छिपा दिया, तो उन्होंने खोज निकाला अपने बच्चों को। कुछ बच्चों को जिन्हें खोज नहीं निकाला था खुद ही उड़ कर चले आए। उनका कोई अगुआ नहीं था, उन्हें कोई बताने वाला नहीं था फिर भी वे उड़कर ठीक से आ गए। इसे कहते हैं कि परमात्मा ने संसार में सारी व्यवस्था सुन्दरता से की है ताकि हम अपने उत्थान को प्राप्त करे। मैं तो इसे (Blossom time) बसन्त ऋतु कहती हूँ। आप इतने लोग आज यहाँ बैठे हैं, ऐसे ईसा मसीह के सामने कहाँ थे? और इस से हजारों गुणा संसार मे फैले हैं। देख करके बड़ा आश्चर्य होता है कि ईसा मसीह के सामने ये सब लोग नहीं थे, और न ही कोई जानता था कि आत्म साक्षात्कार क्या है?

आत्म साक्षात्कार प्राप्त करना क्यों आवश्यक है? आज भी हमारे देश मे भी हैं ऐसे अन्धे लोग जो इस बात को नहीं समझते। पर हमारे यहाँ जो महान गुरु हो गए हैं उन के कारण एक बहुत बड़ी समस्या दूर हो गई है कि लोगों में इसके बारे में ज्ञान हो गया है। सब जानते हैं कि हमें दूसरा जन्म लेना है, अपने को पहचानना है। जो कुछ भी शास्त्र लिखे गए हैं किसी भी धर्म में उनमें भी यही बात लिखी है। आज का दिन इसलिए भी मुबारक है कि आज बंगाल का नया साल का दिन है और इसीलिए इस के पुनरुत्थान की भी बात हो सकती है। यह पुनरुत्थान जो आज हमने मनाया है इस का लाभ अवश्य बंगाल को होगा। यहाँ की संस्कृति और यहाँ की कला, बंगाल देश के महान देशप्रेमी लोग, जिन्होंने सारे देश में सब को एक बड़े ऊँचे स्तर पर पहुंचाया था आज वही कहाँ से कहाँ चले जा रहे हैं। विदेशी, व्यवस्था को छोड़कर चले गए, पर अब

कहीं अधिक हम लोगों ने विदेशी संस्कृति को स्वीकार्य किया है। उस को लेकर हम लोग यह भी नहीं सोचते कि वे लोग कहाँ चले गए। हम लोग यह जानते हैं कि इन लोगों की क्या दशा है? वे कहाँ पहुँच गए। इन लोगों ने क्या पाया हुआ है।

बहुत से ईसाई लोग तो यह सोचते हैं कि ईसा मसीह इंगलैण्ड में पैदा हुए थे और उनके लिए धोती पहनने का अर्थ हिन्दु बनना है। इस प्रकार की विचित्र कल्पनाएँ हमारे सिर में बैठ गई हैं और हम सोचते हैं कि अंग्रेजीयत लेने से हम लोग ईसा मसीह को बहुत नज़दीक से देख सकेंगे। जिनको उन्होंने मलेच्छ कहा, उन्हीं को हम आदर से देखते हैं। वो लोग अब जान गए हैं कि हमारी संस्कृति, हमारी विचार धाराएँ, हमारी धर्म की ओर दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म है और यहाँ के लोग बहुत जल्दी सहजयोग प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन सहजयोगियों को चाहिए कि आपस में पूर्ण रूप से मेल मिलाप से रहें। और यह जो उत्थान का संदेश है हर जगह पहुँचाएं। क्योकि आज आप का देश जिस दशा में है, उस की दशा परिवर्तन के अलावा ठीक हो ही नहीं सकती, आध्यात्म् के सिवा ठीक हो नहीं सकती है। आप कुछ भी करिये। किसी प्रकार कोशिश यह कीजिए कि एक-एक आदमी को सूचना दें, कि हम कितने आदमियों को सहजयोग के बारे में बताते हैं और कितने लोगों को सहजयोग सिखाते हैं। ईसा मसीह अकेले थे। उनके साथ कोई भी नहीं था। उनके साथ सिर्फ उनके 12 शिष्य थे। उस में से भी कुछ आधे अधूरे और कुछ ऐसे वैसे। उन्होंने बहुत मेहनत की और एक बड़ा भारी संदेश अपने उत्थान से, अपने जीवन से दिया। और वह जो संदेश हमें दिखाई देता है वह वास्तव में हमारी आज्ञा पर काम करता है। और आज्ञा पर काम करके ही हमने स्थिति प्राप्त की है कि हम ब्रह्मरंध्र तक पहुंच पाते हैं। उन्होंने हमेशा क्षमा की बात की। उन्होंने हमेशा करुणा की बात की। उन्होंने कहा कि आप सबको क्षमा कर दें। क्रूस पर चढ़ कर भी उन्होंने कहा कि "हे प्रभु इन सब को क्षमा कर दीजिए। ये जानते नहीं कि ये क्या कर रहे हैं। इन सब को माफ कर दो, ये सब अन्धे हैं।" जिस समय उन्हें क्रूस पर चढ़ाया और कीलों से ठोका और कांटों का ताज पहनाया उस समय भी उन्होंने बड़े प्रेम से कहा "प्रभु इन सब को क्षमा कर दीजिए क्योंकि ये जानते नहीं कि ये लोग क्या कर रहे हैं।" यह आज्ञा चक्र की करामात है। इसलिए आज्ञा चक्र पर हमेशा कहते हैं कि आप लोग सब को माफ कर दो। आधे विचार तो हमारे अन्दर यह चलते हैं कि इसने हमें सताया, उसने हमें सताया। यह सब यदि हम परम चैतन्य पर छोड़ दें तो सब समाधान हो जाता है। कई बार तो मैं आपको बताते हुए बहुत डरती हूँ कि यदि कोई सहजयोगी गलत कार्य करता है तो मुझे बहुत घबराहट होती है कि देखो अब आई शामत। यहाँ ईसा मसीह बैठे हैं इधर गणेश जी बैठे हैं, हनुमान और भैरवनाथ बैठे हैं। इन चारों के चक्कर से छूट नहीं पाएँगे। कोई जरा सी गड़बड़ करे, पैसे में गड़बड़ करे, काम में गड़बड़ करे मैं बस सोचती रहती हूँ कि कैसे सब संवर जाए। क्योंकि जब आप पवित्र चीज़ में आ गए, जैसे एक सफेद चादर में कोई भी धब्बा पड़ जाए, तो ये दिखाई देता है, इसी प्रकार आपके अन्दर कोई दाग है तो वे फौरन पकड़ लेंगे। न जाने क्या सजा दें। यह बड़ी कठिनाई है। हालांकि अपने समय तो उन्होंने प्राण दे दिए। परन्तु हमारे बारे में उन्होंने ये कहा कि हमारे बारे में तो आप ने जो भी कहं दिया, सो कह दिया। परन्तु यदि आदि-शक्ति के बारे में कुछ भी कहा तो बहुत बुरा होगा। और मैं देख रही हूँ कि वे बिल्कुल भी सहन नहीं करते। यदि आपने मुझे माँ माना है, तो मैं उस का मान करती हूँ और जब वो सताते भी हैं तो मैं कहती हूँ इन्होंने मुझे माँ कहा, इसलिए इन्हें क्षमा कर दीजिए। पर ये लोग भी इस को समझते हैं।

आपको यह समझना चाहिए कि आप लोगों का जो उत्थान हुआ है वह आपकी पूर्व जन्म की मेहनत, श्रद्धा के फलस्वरूप हुआ है। इस जन्म में आपको यह बहुत बड़ा आशीर्वाद मिला हुआ है। लोग तो समझते थे कि यह हो ही नहीं सकता। यह आशीर्वाद जो आपने प्राप्त किया है। आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप कोई भी गलत काम न करें। क्योंकि गलत कार्य करने से आपकी जो निर्मलता है, पकड़ में आ जाएगी। मैं आपको डरा नहीं रही हूँ बल्कि यह वास्तविकता बता रही हूँ। आप जो भी करें, अत्यन्त प्रेम से, उसका आनन्द उठाते हुए। हो सकता है आपको कोई परेशान करे। कोई बात नहीं। कितनी देर परेशान करेगा, जो परेशान करेगा, उसका ठिकाना हो जाता है। किसी भी स्तर पर भूलना नहीं कि आप एक सहजयोगी हैं। पहले जमाने में कितने सहजयोगी थे। एक थे सूफी निजामुद्दीन, तो उनकी गर्दन काटने को शाह निकल आए। उन्होंने कहा कि अगर तुम मेरे आगे सिर नहीं झुकाओगे तो तुम्हारी गर्दन

काट लेंगे। और दूसरे दिन उसकी गर्दन काट ली। सो अगर कभी ऐसा हो भी तो डरना नहीं क्योंकि आप लोग अब परमात्मा के साम्राज्य में हैं। और इस बात को मद्देनजर रखते हुए आप को समझना चाहिए कि अब आप लोग अकेले नहीं हैं। आप पूर्णतया सुरक्षित हैं और इस सुरक्षा में आप क्यों परेशान होते हैं।

बहुत से लोग आते हैं, माँ मुझे ये प्राब्लम है, मुझे वो प्राब्लम है। इसका अर्थ यह है कि आप सहजयोगी नहीं हैं। जो सहजयोगी होगा उसको कोई समस्या (प्राब्लम) होगी नहीं। क्योंकि आप एक ऊँची जगह पर बैठे हैं। और प्राब्लम नीचे खींचते रहते हैं। यदि आप हर समय प्राब्लम प्राब्लम करते रहें तो सोच लेना चाहिए कि कुछ कमी है आप में। इसके लिए ध्यान करें, धारणा करें। अपने अन्दर धारणा करें कि आप सहजयोगी हैं। इससे आपके अन्दर एक आत्मविश्वास पूर्णतया प्रतीत होता है, लोग भी समझते हैं। **आप केवल शांत हो जाऐं। आपने चुप्पी लगा ली तो परम चैतन्य पूर्णतया संभाल लेगा।** एक से एक धुरंधर बैठे हैं। परन्तु यदि आपमें ही दोष होगा तो कहेंगे। इसको डुबकियाँ लगाओ दो-चार।

इस प्रकार ईसा मसीह का एक छोटा सा जीवन था केवल 35 वर्ष का। उसमें भी वे भटकते रहे। और भटकते हुए भारत भी आए। जितना जीवन में उन्होंने कार्य किया उनका नाम लेकर के न जाने लोगों ने कितनी तरह-तरह की संस्थाएँ बनाई। ये करना है, वो करना है। झूठ है सब, गड़बड़ है। पर कितना उन्होंने काम किया। उनके मुँह में भी न जाने कैसी-कैसी गलत वस्तुएँ डाली गईं। एक झूठी संस्था भी बना ली। जिस हीरे को इन्होंने ढक लिया वो आपके अन्दर में है। आपकी आज्ञा में कार्यान्वित है। आपकी क्षमा शक्ति जितनी बढ़ जाएगी आप उतने ही सहस्रार पर रहेंगे। ईसाई लोगों का तो यह है कि वे पैदा ही हुए ईसाई। उन्हें बस इतना ही मालूम है इसलिए हम उन्हें ईसाई स्वीकार करते हैं। हिन्दुओं को बस कृष्ण ही मालूम है, शिव मालूम है। इसी में खुश रहते हैं। और भाई, आप इससे परे उठ गए, पार हो गए, अब आप स्वयं सूफी हो गए। इन सब चीज़ों में जो सार है उसको आप ग्रहण कीजिए और प्रत्येक चीज़ में सत्य को खोजिए। बहुत सी चीज़ों में असत्य है। इन सब धर्मों में बहुत सी बातें असत्य भी हैं। जैसे ईसाई धर्म में आप देखिए, वही बात ईसाईयों में भी है और वही बात मुसलमानों में भी है। कि जब आप मर जाएँगे तो आप अपने को गाड़ लीजिए। अपना शरीर गाड़ लीजिए। जलाईए मत, और जब आपका पुर्नउत्थान होगा तो आपका यही शरीर पुनः बाहर आ जाएगा, यदि आप परमात्मा के नाम पर मरे हैं और आपने अपना जीवन उसके लिए त्यागा है। अब सोचो 500 साल बाद क्या चीज़ बाहर आएगी, यदि आप को गाढ़ दिया जाए? उनसे पूछना चाहिए, कि जो हड्डियाँ बच कर आएँगी उनकी क्या स्थिती होगी। यह विश्वास बहुत लोग करते हैं यह विश्वास इतना गहरा है कि मेरे पास कुछ लोग आए थे। मैंने कहा "क्यों मरे जा रहे हो। तुम्हारा तो निराकार में विश्वास है, तुम क्यों जमीन के लिए लड़ रहे हो?" तो उन्होंने मुझे कहा कि हमारे तो शास्त्र में यह लिखा है कि यदि तुम भगवान के नाम के लिए मरे तो ऐसा-ऐसा होगा। मैंने कहा पहले तो मुझे बताओ कि इसमें भगवान का नाम कहाँ लिखा है। दूसरी बात यह बताओ कि तुम यदि मर गए और तुम्हारा पुर्नउत्थान 500 वर्ष बाद हुआ, तो अन्दर से क्या निकलेगा? तुम तो कब्रों में जाकर के सारी जमीन ले लेते हो और भूत बनते रहते हो।

इस सम्बन्ध में मैं यह कहती हूँ कि अपने शास्त्र ठीक हैं, कि मरने के बाद आत्मा जो है वा निकल जाता है। और जो जीवात्मा है वह फिर से जन्म लेता है। क्योंकि जीवात्मा मरता नहीं। शरीर का 500 वर्ष बाद पुर्नउत्थान होगा ऐसी बात का विश्वास करना महामूर्खता है। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि ऐसी महामूर्खता को लेकर ये लोग जगह-जगह आपस में लड़ रहे हैं। आज इज़राईल में मारा-मारी हो रही है तो कल दूसरे स्थान पर होगी। यह मारा-मारी हो रही है मात्र धर्म को लेकर। मैंने कल भी बताया था कि सभी धर्म आपस में गुंथे हुए हैं। कोई भी धर्म अलग नहीं है। सभी ने यह वर्णन किया है, फिर यह लड़ाई क्यों, झगड़ा क्यों? यह सब कुछ उन लोगों का किया हुआ है जो अपने को धर्म मार्तण्ड कहते हैं। अब सोचिए कि ईसा समीह ने एक बहुत बड़ी बात कही कि "तुम्हारी दृष्टि स्वच्छ होनी चाहिए।" (Thon shalt not have adultrous eyes) यानि चित्त में भी (adultery) अस्वच्छता नहीं होनी चाहिए। पर हमने तो विदेश में देखा कि हरेक की आंखे इधर से उधर चलती रहती है। किसी को देखा ही नहीं कि जिसकी आंखें न चल रही हों। केवल सहजयोगियों को छोड़कर। इस प्रकार उन की (ईसा की) जो विशेष वाणी

थी उसको कौन पालन कर रहा है, कौन मान रहा है? कोई नहीं। क्यों? क्योंकि उन्हें आत्मबोध नहीं है। यदि उनको आत्मबोध हो जाता तो उनकी आँखे स्थिर हो जाती। उनसे प्यार झलकता है। शांति और आनन्द झरता। यह कैसे हुआ? कि उतनी आँख शुद्ध हो गई। जैसे कि ईसा मसीह ने कहा वैसी आँख हो गई। उन्होंने जो कहा था, वह मात्र कहने से थोड़े ही हो सकता है। विदेश में तो यह बिमारी आवश्यकता से अधिक है। तो हमें समझ में आता है कि जो कुछ ईसा मसीह ने कहा हम कर नहीं पाते। कोई सा भी ऐसा धर्म नहीं है जिसमें लोग जो कहते हैं वही करते हैं। कारण वे समर्थ हैं। यानि जो हैं उस का अर्थ नहीं है। कोई कहेगा मैं ईसाई हूँ परन्तु उसकी आँखों में गन्दगी भरी रहेगी। कोई कहेगा मैं जैन हूँ और वह कपड़े की दुकान करेगा। अर्थात जो नहीं करना वही करेंगे। इसका कारण है कि हमारे अन्दर वह धर्म जागृत नहीं हुआ। और सहजयोग में यह जागृत हो जाता है। **आत्मसाक्षात्कार होने के बाद, जागृत होने के बाद यदि आप उसका मान नहीं करेंगे और उसमें आप अपनी प्रगति नहीं करेंगे तो न जाने आपको क्या-क्या कष्ट झेलने पड़ सकते हैं।** इससे पहले आप को जो कष्ट थे, तकलीफें थीं वह महसूस नहीं होंगी। परन्तु अब आप संवेदनशील हो गए हैं। इसलिए समझ लेना चाहिए कि हमने जो इतनी बड़ी चीज़ पाई हे उससे हम अलकृंत हो गएं, उससे हम सज गए। अब हमें अपने वैभव में और गौरव में होना चाहिए। जैसे ईसा-मसीह का पुर्नउत्थान हुआ था। वे कब्र से उठे थे, उनका चेहरा बहुत ही खिल गया था, उन की बातें और भी सुन्दर हो गईं थीं; इसी प्रकार ईसा मसीह सहजयोगी थे। लेकिन उन्होंने उसे प्राप्त किया था और आप के लिए उन्होंने प्राण त्यागे कि आप का आज्ञा चक्र खुले। सो अहंकार आदि जो व्याधियाँ हैं उनसे दूर रहना चाहिए। अंहकार जब चढ़ जाता है तो आप कुछ भी हो सकते हैं, हिटलर भी हो सकते हैं। न जाने आप अपने आप को क्या समझ रहे हैं। जिसने हमें इस आज्ञा चक्र से ऊपर उठाया है, उस ईसा मसीह के जीवन को यदि आप देखेंगे कि वे बिल्कुल निर्मल है। इसी प्रकार हमारा जीवन भी पूर्णतया निर्मल होना चाहिए।

सहजयोग में विवाह की पूर्ण रूप से व्यवसथा है। हालांकि ईसा मसीह ने विवाह नहीं किया था। उनको कोई ज़रूरत ही नहीं थी। परन्तु आपके लिए सभी प्रकार की व्यवस्थ है। इस व्यवस्था से आप पूर्ण रूप से सर्व सामान्य लोगों की तरह रह सकते हैं और अपनी विशेषता को समझते हुए रहें। ईसा मसीह और सूफी लोग अपनी विशेषता समझते थे। अकेले ही उन्होंने सारे विश्व में कार्य किया। आपके तो सारे विश्व में इतने सारे भाई बहन हैं। कितना आपमें आत्मविश्वास होना चाहिए। आप अकेले नहीं हैं। सभी लोग एक ही बात कहते हैं सब को एक ही चीज़ प्राप्त है। और जब आप इस चीज़ को पाते हैं तो इसका महत्त्व समझना चाहिए। इससे अमूल्य और कुछ भी नहीं है।

यद्यपि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि कलकत्ते में इतना कार्य हो गया। इतने सहजयोगी हो गए, आपस में बहुत प्रेम है, कोई फूट नहीं, कोई झगड़ा नहीं। यह बहुत बड़ी बात है। मैं सोचती हूँ कि यह देवी की कृपा है कि लोग सहज में उतरते हैं। जैसे पुरुष कार्य कर रहे हैं वैसे स्त्रियों को भी करना चाहिए। जब सब ओर सहजयोग फैल जाएगा तो बंगाल देश बहुत सुन्दर स्वरूप में उतरेगा।

आप सब को मेरा अनन्त आशीर्वाद।

महाशिव रात्रि पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

बम्बई 19-2-93

आज यहां पर हम लोग शिवजी की पूजा करने के लिये एकत्रित हुए हैं। ये पूजा एक बहुत विशेष पूजा है क्योंकि मानव का अन्तिम लक्ष्य यही है कि वो शिव तत्व को प्राप्त करें। शिव तत्व बुद्धि से परे है। उसको बुद्धि से नहीं जाना जा सकता। जब तक आप आत्म-साक्षात्कारी नहीं होते, जब तक आपने अपने आत्मा को पहचाना नहीं, अपने को जाना नहीं, आप शिव तत्व को जान नहीं सकते। शिवजी के नाम पर बहुत ज्यादा आडम्बर, अन्धता और अन्धश्रद्धा फैली हुई है। किन्तु जो मनुष्य आत्म-साक्षात्कारी नहीं वो शिवजी को समझ ही नहीं सकता क्योंकि उनकी प्रकृति को समझने के लिये सबसे पहले मनुष्य को उस स्थिति में पहुंचना चाहिए जहां पर सारे ही महान तत्व अपने आप विराजें। उनके लिए कहा जाता है कि वे भोले शंकर हैं। आजकल बुद्धिवादी बहुत से निकल आए हैं संसार में, और अपनी बुद्धि की उड़ान से जो चाहे वो ऊट पटांग लिखा करते हैं और फिर कहते हैं कि ये शिवजी तो भोले हैं। किसी का भोला होना बुद्धिवादियों के हिसाब से तो एकदम ही बेकार चीज है। आजकल आदमी जितना चालाक और धूर्त होगा वो यशस्वी हो जाता है। तो इनका भोलापन कैसे समझा जाए? आजकल के लोग सोचते हैं कि जो आदमी भोला होता है वो नगन्य है, बेवकुफ है। लेकिन शिवजी का भोलापन ऐसा है कि जहां वो सब कुछ हैं। समझ लीजिए कि ज़रूरत से ज्यादा कोई श्रीमन्त रईस आदमी हो जाए और उसको विरक्ति आ जाए और उसका लोग धन उठा के ले जाएं तो लोग कहेंगे अजीब भोला आदमी है जिसका लोग धन चुरा रहे हैं, उसपे कोई असर ही नहीं। लेकिन जब उसको विरक्ति आ गई और उस धन का उसके लिए महात्म्य ही नहीं रहा तो वो अपने भोलेपन में बैठा है और भोलेपन का मजा उठा रहा है। जब सब चीज अपने आप हो ही रही है, सब कुछ कार्यान्वित ही है। तो शिवजी का उसमें कार्य भाग क्या रहता है। वे भोलेपन से सब चीज देखते रहते हैं। वो साक्षी स्वरूप हो करके और शक्ति का कार्य देखते रहते हैं। शक्ति ने सारी सृष्टि रचाई और शक्ति ने ही सारे देवी-देवता बनाए और उनके सारे कार्य बना दिए। उनकी नियुक्ति हो गई और अब शिवजी को क्या काम है। शिवजी को बस देखना मात्र है। और फिर देखने में ही सब कुछ आ जाता है। उनके भोलेपन का असर है तो यह है कि जिसपे भी दृष्टि पड़ जाए वो ही तर जाता है। जिसके तरफ उनका चित्त चला जाए वो ही तर जाए। कुछ उनको करने की ज़रूरत ही नहीं है। ये सब खेल है। जैसे बच्चों के लिए खेल होता है परमात्मा के लिए भी वो सारा एक खेल है। वो देख रहे हैं। उस भोलेपन में एक और चीज नीहित है। जो भोला आदमी होता है, सत्यवादी होता है अच्छाई से रहता है, वो जब देखता है कि कोई बहुत ही दुष्ट उनसे मुठभेड़ ले रहा है तब उसको बड़े जोर से क्रोध आता है। उसका क्रोध बहुत जबरदस्त होता है। चालाक आदमी होगा वो क्रोध को घुमा देगा, ऐसा बना देगा कि उसकी जो प्रमुख किरणें हैं वो कुछ शान्त हो जाएं। लेकिन भोला आदमी जो होता है वो हंसते ही रहता है। ये क्या मेरे ऊपर वार कर सकता है। ये शिवजी का जो गुण है वो हम सहजयोगियों में आना जरूरी है। इस वक्त हम छोटी-छोटी बातों को सोचते रहते हैं। इनके लिए क्या करना चाहिए। इसकी योजना कैसी करनी चाहिए। जैसे शिवजी ने शक्ति पर सब छोड़ दिया है आप लोग भी सब कुछ शक्ति पर छोड़ सकते हैं लेकिन वो भी फिर एक स्थिति आनी चाहिए। वो भोलापन आपके अन्दर आना चाहिए। इस भोलापन का मतलब ये है कि किसी तरह की नकारात्मकता आपके अन्दर आ ही नहीं सकती। इसलिए आप भोले हैं। सांप लोटे रहे हैं तो सांप को लौटने दो। आप बेकार में परेशान क्यों हैं। जहर पीना है तो जहर पी लेंगे। होना क्या है। जो बिल्कुल विशुद्ध है, जिसमें किसी भी चीज का असर ही नहीं आ सकता, जो समर्थ है, जिसकी शक्तियां स्वयं ही उसकी रक्षा कर रही हैं उसको यह बात है कि क्या करे क्या न करें। ये शक्ति हमारे अंदर शिव तत्व से आती हैं शिव तत्व को प्राप्त करनके लिए आत्म साक्षात्कार होना चाहिए। कुण्डलिनी जो है वो शक्ति है चक्र जो हैं ये सीढ़ियां। इन सब सीढ़ियों से चढ़ के आपको प्राप्त एक ही करना है। वो है शिव तत्व। सारे देवी देवताओं को एक विचार है कि आप सबको शिव तत्व पे पहुंचा दें। ये उनका कार्य है और वो उस कार्य मे पूरी तरह से लगे हुए हैं। वो ये नहीं पूछते कि इसमें हमारा क्या होगा? हमारी स्थिति क्या है? कहां बैठे? मनुष्य के जैसे नहीं सोचते। वो अंग प्रत्यंग उस शिव के ही हैं और शिव तत्व पर मनुष्य को पहुंचाने के लिए कार्य तत्पर

रहना उनका स्वभाव है। उनको कुछ भाषण देने की ज़रूरत नहीं, उनको कुछ बताने की ज़रूरत नहीं। उनका जो काम है वो भी एक अकर्म सा है। वो बंधे हुए हैं वो अपना काम पूरी तरह से करते हैं। वो सोचते ही नहीं कि कुछ काम कर रहे हैं। ये सारा प्रकाश बिजली से आ रहा है और जड़े होने के कारण उसमें कोई शक्ति नहीं कि वो सोचे। और क्योंकि ये सब देवता लोग निर्विचारिता में बैठे हुए हैं वे भी कुछ सोचते नहीं और जानते भी नहीं कि उनमें क्या शक्तियां हैं। जैसे खाने की चीनी सबको मिठास देती है, पर वो नहीं जानती कि उसके अन्दर मिठास है। इसी प्रकार सहजयोगी जब कार्यरत होते हैं तो वो ये नहीं जानते कि हमारे अन्दर ये शक्ति है इसलिए हम कार्यरत हैं। जिस वक्त आप लोगों के दिमाग में ये बात आई कि हमने ये कार्य किया, वो कार्य किया, हम लीडर हो गए, हम वो हो गए तो आप सहजयोगी नहीं। सहजयोग में मनुष्य अकर्म में आ जाता है। वो करते रहता है। दिखने को लगता है कर्म कर रहे हैं पर उसको ज्ञात नहीं होता कि वो कुछ कर्म कर रहा है। उसको मालूम नहीं होता कि वो प्यार कर रहा है, पर लोग जानते हैं कि वो बहुत प्यार करता है।

इस प्रकार हमें समझ लेना चाहिए कि आत्म-साक्षात्कार क्या है। एक है जो आप स्वयं हैं सो हैं और आप अपने को शीशे में देख रहे हैं। वो आपका प्रतिबिम्ब हैं। और प्रतिबिम्ब को देखने की जो क्रिया है, देखना मात्र जो है एक तीसरी चीज है। इस प्रकार आप तीन दायरों में घूम रहे हैं। एक देखने वाले, एक जो आपको दिखाई दे रहा है और एक जो देखने की चीज है। ये तीनों ही चीज खत्म हो सकती है। कैसे? कि अगर आप ही अपना आईना बन गए फिर आप अपने को देखते रहते हैं, आप अपने को जानने लगे। यही तुकाराम ने कहा कि आपने अपने को जान लिया फिर और जानने की ज़रूरत ही क्या है? तब ये तीन दायरे कूद कर आप स्वयं में स्थिर हो गए। यही स्थिरता जब पूरी तरह से बन जाती है तब कहना चाहिए कि शिव तत्व स्थिर हैं क्योंकि वो अटूट और अटल है। इस शिव तत्व में जब आप बैठ जाते हैं तो आपको ऐसा नहीं लगता कि आप कुछ कर रहे हैं। आप अपने में ही समाये रहते हैं। फिर आप ये भी नहीं सोचते हैं कि मुझे कुछ और करना चाहिए। जैसे आजकल बहुत से लोग कहते हैं कि हम बोर हो गए। क्योंकि आप अपने को देख नहीं सकते। आप अपने साथ रह नहीं सकते। आप अपने साथ पांच मिनट बैठ जाएं तो आपको ऐसा लगता है कि भाग खड़े हो। मेरे लिये तो अपने साथ बैठना सबसे बड़ी बात है। इस रस को जब आप प्राप्त करते हैं तब एक भोलापन आपके अंदर आ जाता है। अगर आत्मा है और जिसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता तब ये कौन नष्ट कर सकता है? किन्तु ये विश्वास हमारे अन्दर बैठना बड़ा मुश्किल है। आत्म-साक्षात्कार के बाद आप सहजयोगी हो गये। लेकिन शिव योगी होने के लिये परम विश्वास की ज़रूरत हैं जैसे कोई साहब जा रहे है तो कहेंगे कि मां कर्फ्यू है हम कैसे जाएं। आज तक ये बंबई शहर में कोई भी सहजयोगी को नुकसान नहीं हुआ। आप भूल गये आप सहजयोगी हैं। आपके आगे पीछे देव-दूत गण सब लगे हुए हैं लेकिन जैसे आपका विश्वास उठा वो भागे वहां से। कोई कहेगा कि मुझे ठगा जा रहा है, तो ठगता रहे। वो तुम्हें मारने आ रहा है, तो आने दो। वो तुम्हारा कुछ बिगाड़ रहा है तो बिगाड़ने दो। आगे होगा क्या? जाओ मरो। जब विश्वास बना रहा तो आप चले जा रहे हैं। किसी को आप दिखाई ही नहीं देंगे और दिखाई देंगे तो भी पार हो जायेंगे। ऐसे नाना विध प्रश्न हमारे अन्दर आते हैं क्योंकि हम मानव हैं अभी और सभी तरह की असुरक्षा की भावना हमारे अन्दर बनती है। और उसकी वजह से हमारे विश्वास टूटते जाते हैं।

दूसरी बात कि हमसे कोई गलतियां नहीं होती, ऐसी भी बात नहीं है। कुछ गलतियां होती हैं। उन गलतियों के होने के फलस्वरूप एक तरह का हमारे अन्दर भय आ गया है। लेकिन शिवजी की विशेषता ये है कि वो क्षमाशील है। क्षमा के सागर हैं। आपने गलतियां की तो कुछ नहीं। आप उनके दरवाजे में बैठे हैं तो पूरी तरह से क्षमा कर देते हैं आपको। तब आपको भय क्यों होगा। दूसरा वरदान उनको है निर्भयता। बिल्कुल निर्भय होना चाहिए। उनकी कोई सेना नहीं है। आपने तो जाना ही है कि जिस वक्त अपनी बारात लेकर वो पहुंचे थे तो पार्वती जी को तो शर्म आ रही थी। कोई लंगड़े कोई पागल दिखने वाले हिप्पियों जैसे लोग, अजीब से अजीब लोगों को लेकर पहुंचे बारात में। मतलब ये शारीरिक कुछ भी अवस्था हो और जन साधारण के लिए ऐसे लोग कुछ विक्षिप्त से लगें, विचित्र से लगे लेकिन उनके अन्दर शिवतत्व है। इसलिए शिव के लिए कोई भी पैसा धन की जरूरत नहीं। उनके मंदिरों में सोने चांदी के चढ़ावे की जरूरत नहीं। मुक्त बैठे हैं। किसी भी चीज में ऐसी शक्ति नहीं कि उनकी शोभा बढ़ाये। ऐसी कोई संसारिक दृष्टि से मूल्यवान वस्तु शिवजी के लायक नहीं। इस तत्व को हमारे अन्दरआना बहुत-बहुत जरूरी है। आज समाज में आप अगर देखें तो पैसे का मूल्य जरूरत से ज्यादा है। हर आदमी पैसे का ही मूल्य देखता है। किस चीज में पैसा मिलेगा। क्या करने से पैसा मिलेगा? और पैसे के मूल्य में सभी चीज वो बेचने को तैयार हैं। पैसे नष्ट भी हो सकते हैं। दुष्ट कर्मों में भी डाल सकते हैं, लेकिन शिव तत्व में बैठा हुआ मनुष्य उसको किसी चीज की इच्छा नहीं होती। इच्छारहित होता है क्योंकि

अपने आत्मा से ही उसकी आत्मा संतुष्ट है। शरीर की कोई उसको चिंता नहीं होती। शरीर के आराम की उसको चिंता नहीं होती। कहीं भी सुला दीजिए उसको। कुछ भी खाने को दे दीजिए, नहीं तो मत दीजिए। और फिर जब ये दशा आ जाती है तो वो सभी चीज़ों पर अधिकार करती है। जैसे आपने ऐसे आदमी को खाने को नहीं दिया। लेकिन वो एक नजर फिरा दे तो हजारों आदमियों को खाना दे सकता है। उनके शरीर को कोई आराम नहीं है। लेकिन उनकी नजर दाता है। जिसपे पड़ जाए वो नजर दान में से भरपूर हो जाए। अब ये कौन सी शक्ति है जिससे वो सबका कल्याण करते हैं? ये है परम चैतन्य। और उसका जो स्पन्दन है उसे शंकराचार्य ने स्पन्द कहा है। इस स्पन्द की शक्ति उनके शरीर से बहती रहती है और जिस आदमी को वो छू जाती है उसी का कल्याण हो जाता है। जिस भूमि पे वो पड़ जाती है वो भूमि बहुत ज्यादा फल फूल देने वाली हो जाती है। जिस स्त्री में पड़ जाएगी वो बड़ी सुबुद्धि वाली हो सकती है। जिस पर पड़ जाए उसका भला हो सकता है। स्पन्द ऐसी चीज है जिससे अच्छाई ही आ सकती है। कोई आदमी आपको मारने को आए, उसका परिवर्तन हो सकता है। कोई आपको सताने आए उसको सुबुद्धि आ सकती है। एक तरह कि जो परिवर्तन की शक्ति इस स्पन्द में है ये हमारे लिए बड़ी समझने की बात है। इसलिए हर आदमी को आपको क्षमा कर देना चाहिए। आप क्यों उससे बदला ले रहे हैं, कोई जरूरत नहीं। आप सहजयोगी हैं ये स्पन्द पे छोड़ दीजिए। इसे लहरियों पे छोड़ दीजिए। सब समझते हैं सोचते हैं, सब पूरी तरह से व्यवस्था करते हैं। इस शक्ति को आपने प्राप्त किया है। ये आपमें से अव्याघ बह रही है। इस शक्ति को आपने आजमाया है कि इससे कितना फायदा होता है। अब जो लोग बुद्धि से इसको जानना चाहें वो नहीं जान सकते। लेकिन आपने तो अनेक चमत्कार देखे हैं, और ये कितनी ऊंची, कितनी प्रचण्ड, कितनी बड़ी शक्ति है, जो कार्यान्वित है और आपको मदद कर रही है। और आप इसके अधिकार को प्राप्त हो रहे हैं। उस वक्त हमें ये सोचना चाहिए कि शिव तत्व हर चीज पर, पूरे पर्यावरण पर चल सकता है। आजकल पर्यावरण का बड़ा भारी संकट संसार पर छाया हुआ है। जितने सहजयोगी होंगे उतना पर्यावरण शुद्ध हो जाएगा। अपने आप ही शुद्ध हो जाएगा।

इसके अधिकार पथ पे आने के लिए सबसे पहले हमें ये जान लेना चाहिए कि अब हम मानव स्थिति में नहीं। हम अब दैवी स्थिति में आ गए हैं। तो मानव स्थिति की जो हमारे अन्दर गलतियां हैं जो खींच है, उससे हमें छुट्टी मिलनी चाहिए। ये मानव स्थिति हमें नीचे खींचती है। और बार-बार हमारे ऊपर आक्रमण करती है। ऐसे ही हम जड़ से पैदा हुए। पहले तो ये आत्मा का झगड़ा इस जड़ से ही प्राप्त हुआ और अब भी ये जड़ बीच-बीच में खींचता रहता है। इसीलिए पहले जमाने में लोगों ने बताया था कि उपवास करो, सन्यास लो, घर बार छोड़ के भाग खड़े हो जाओ और मर जाओ। लोग सोचते थे कि अनेक जन्मों में इस तरह के तपस्या करने से आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त होंगे। लेकिन आज का सहजयोग ऐसा है जहां पहले आप अपने आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करो। कि पहले मंदिर का कलश बनाओ और फिर उसके नीवं को बनायेंगे। क्योंकि अगर बहुत लोगों को पार कराना है और जिसकी ज़रूरत है तो यही तरीका हमने ठीक समझा। और हिमालय में जाए बगैर, अपने परिवार को छोड़े बगैर और आफत उठाए बगैर ही आप लोगों ने आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त किया। ये तो बात सही है। और आपमें स्पन्द की शक्ति भी आ गई। यहां तक तो कुण्डलिनी ने काम कर लिया। अब आगे आपको काम करना है। और वो काम ये कि पहले तो अपनी ओर देखना है। जब आप शीशा हो गए तो आप अपने को देखिए। पहले तो अपनी ओर नजर होनी चाहिए कि मैं अब भी एक सर्व साधारण मानव के जैसे रह रहा हूं। शराब छूट गई। सिगरेट छूट गई। गाली मुंह से निकलना बंद हो गया और स्वभाव भी बहुत शांत हो गया। चेहरे पे भी मासूमियत आ गई। लेकिन अब भी क्या मै अपने को देख सकता हूँ? क्या मैं अपने को अपने मजे में रख सकता हूँ या मैं बोर हो जाता हूँ? क्या मैं अपने मे मजा पाता हूँ? मैं अपने में ही आनन्द को प्राप्त कर सकता हूँ? और क्यों नहीं कर सकता? इस पर आप बुद्धि से विचार कर सकते हैं। क्या अब भी मैं इस या उस चीज में अटका हूँ? और जिन चीजों में आप अटके हैं उसमें अटकते ही जा रहे हैं अगर आप भोले हैं तो कोई चीज आपको अटकाएगी ही नहीं। और जिन चीज़ों में आप अटके हुए थे वो आपको मिल नहीं रही और फिर से वो ही मानवीय जीवन शुरू हो जाएगा। लेकिन गर आप इन चीजों को देख लें आज हमें ये चीज अटका रही है, ये चीज हमारे अंदर है तो देखने से ही ये चीज गिर जाएगी। इसकी ओर दृष्टि करने से ही ये चीज चली जाएगी। अगर हमें एक नया संसार बनाना है, एक बहुत सुंदर संसार, ऐसी माँ की इच्छा है कि एक विशेष तरह की पीढ़ी तैयार करें जो खालिस हों। इसके बारे में अनेक साधु संतों ने इच्छा की थी। वो अगर आपने करना है तो ये जरूरी है कि आप अपने शिव तत्व को ठीक करें।

शिव तत्व में आप जान लेंगे कि अभी क्या-क्या चीज घुसी हुई है। जैसे आजकल हिन्दू, मुसलमानों का झगड़ा चल

रहा है। कोई हिन्दु हो जाने से शिव तत्व नहीं पाता। न मुसलमान होने से पाता है न ईसाई होने से, न कुछ होने से पाता है। ये सब बाह्य के आडम्बर हैं। लेकिन जब आपमें शिव तत्व प्राप्त होता है तो आप श्री राम को भी मानते हैं और आप मुहम्मद साहेब की भी पूजा करते हैं। जब तक आप शिव तत्व को प्राप्त नहीं होते इन धर्म के आडम्बर से आप निकल नहीं सकते। अन्दर से उनकी भी पूजा उतनी ही होनी चाहिए जितनी श्री राम की। जो रहीम है वो ही शिव है। जो रहमान है, जो अकबर है वो ही विष्णु है। तब फिर ये अन्दर की जो भावनाएं हैं ये ऐसे विकसित हो जाएंगी कि आपके अन्दर से धर्म की सुगंध बहेगी न कि वैमनस्य। पर ये चीज घटित होने के लिए मुझे तो सहजयोग के सिवा ओर कोई मार्ग नहीं दिखाई देता। जब तक सहजयोग नहीं होगा। तब तक लोग ऐसी पूजा करेंगे? क्या मुसलमान राम की पूजा करेंगे? या हिन्दु मुहम्मद साहिब की पूजा करेंगे। हम लोग तो करते हैं। मुहम्मद साहेब की भी, अली की भी फातिमा बी की, बुद्ध की, महावीर की पूजा करते हैं, क्योंकि ये सब पूजनीय है। हम कौन होते हैं किसी को बड़ा छोटा कहने वाले। पर जब शिव तत्व के सागर में आप घुल जाते हैं तब आप को पता होता है कि ये सब शिव के ही अंग-प्रत्यंग हैं। ये सब अपने ही हैं। ये सब हमारे ही अन्दर है। जब तक इस तरह की धारणा हमारे अन्दर नहीं होती तो हो सकता है कि सहजयोग का कार्य कुछ कम तेजी से चले। लेकिन सहजयोग ठोस चीज है। असली चीज है। और ये जो बाह्य की चीजें हैं ये थोड़ी देर के लिए आई, गई। मारा पीटी हुई सब कुछ हुआ। आश्चर्य की बात ये है कि विदेश में सहजयोग इतने जोर से फैल रहा है। वे लोग बहुत ही गहन है। रोज ध्यान करना, रोज अपनी ओर नज़र करना। इन लोगों से हमें सीखना चाहिए। इन्होंने तो कभी शिवजी का नाम भी नहीं सुना था। ईसा मसीह के सिवाय इन लोगों ने कभी शिवजी का नाम भी नहीं सुना था। फिर ये इतनी गहनता में कैसे उतरे? हम लोग रोज ही सुनते रहते हैं। मंदिरों में जाके घंटियाँ बजाते हैं, चर्च में जाके प्रार्थना करते है। और सब ठनठन गोपाल। और ये लोग जिन्होंने कभी भगवान को भी नहीं याद किया होगा। इन लोगों में ये गहनता कैसे आ गई? रूस के एक गाँव में 22,000 सहजयोगी बैठे हैं। तो ऐसे हम लोगों में कौन सी खराबी आ गई है कि जिसके कारण हम उस गहनता में नहीं उतर पाते। उसकी वजह ये है कि रोज हम अपने को देखते नहीं। पहले अपने को देखना चाहिए। अपनी ओर नज़र करनी चाहिए। ये नज़र इन लोगों में कहां से आई ये मै नहीं बता सकती। लेकिन परिणाम देखिए वो बड़े गहन लोग हैं। कभी मुझसे ये नहीं कहेंगे कि हमारे पैसे का क्या होगा, बच्चे, मां बाप, रिश्तेदारों का क्या होगा। बस पूछेंगे कि माँ मेरा क्या होगा। और जैसे ही वो इस तत्व में आ गए उनके सब प्रश्न अपने आप ही हल हो गये। शिव तत्व में शक्ति ही ऐसी है, वो सारे प्रश्नों को हल कर देती है। उनके प्रश्न अपने आप ही हल हो गये। जो लोग शराब पीते थे, दुनिया भर की चीजें बेचारे करते थे, दल-दल से निकल कर वो आकर किनारे पर बैठ गये। पर हम लोग अभी भी किसी न किसी चक्कर में घूमते ही रहते हैं। इस चक्कर को खत्म करना चाहिए। आज शिव रात्रि के दिन विशेषकर अपने शिव तत्व पे उतरिये ताकि वो आपको सारे गुणों से अलंकृत कर दे। शिव तत्व में ऐसे गुण हैं कि सहज में ही आपके अन्दर धर्म आ जाएगा, सहज में ही आपके अन्दर सुबुद्धि आ जाएगी, सहज में ही सारा ज्ञान आपके अन्दर आ जाएगा। सहज में ही आपमें माधुर्य आ जाएगा। सहज मे ही परिपक्वता आ जायेगी। न जाने कितने ही गुण सहज में आपके अन्दर आ सकते हैं। लेकिन पहले ये जान लेना चाहिए नम्रतापूर्वक, कि अभी हम उस तत्व पे उतरे के नहीं? हमें उतरना है। और दूसरी ये कि सारी ही शक्तियां सहज में हमारे से प्रस्फुटित हो रही हैं। कुछ करना नहीं पड़ेगा। इस तरह से हमें अपनी ओर देखना चाहिए कि मेरे पति, मेरे बच्चे सहजयोग नहीं करते, नहीं करने दो, ये तो आन्तरिक चीज है जिसको पाना है वो ही पा सकता है। ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकते सहजयोग की। आप अपने को देखो। अपने को जानना, अपने को देखना, यही आत्म-साक्षात्कार है। फिर आपको देखकर लोग सहजयोग में उतरेंगे। और इस परम तत्व को पाने के बाद आप लोग इतने शक्तिशाली हो जाएँगे कि न जाने कितने लोगों को आप परिवर्तितत कर दें, ये संसार बदल दें। ये संसार बदलने के लिए है। कोई कहेगा यहाँ प्रजातंत्र है और प्रजातंत्र कि ये खराबियाँ हैं। खराबियाँ प्रजातंत्र की नहीं, खराबी इन्सान की है जो शिव तत्व को प्राप्त नहीं करता।

कोई सी भी चीज आप ले आओ वो खराब होनी ही है। उसमें बिगाड़ आना ही हुआ क्योंकि उसमें बिगड़ने के तत्व हैं। लोग आचार बनाते हैं घर में, उसे बहुत सफाई करके, धोकर, सुखाकर ताके उसमें कीड़ा वगैरह कछ नहीं रह जाए। ये जैसे आचार खराब हो जाए वैसे ही हमारा हाल है। ऐसे ये लोग हैं कहां? कोई सा भी आप सवाल बनाओ, कोई सी भी आप चीज बनाओं, यही होने वाला है क्योंकि उसके अंदर कीड़े हैं। उसके अन्दर दोष है। जब तक मनुष्य के अन्दर दोष रहेगा ये जो भी चीज बनाता रहेगा उसमें दोष आना ही है। थोड़े दिन चलता है जैसे गांधी जी ने सत्याग्रह चलाया था तो थोड़े दिन चला। पर उनमें भी बड़े अजीब-अजीब दोष हुए। मैं तो जानती हूं उनको। पर तो भी जोश था देश को स्वतंत्र कराने का, ये करने का वो करने का। लड़ पड़े। अब तो ऐसा लगता है कि स्वतंत्रता मिल के ये हो क्या

रहा है। खासकर तो मुझे ये वन्देमारतम पर बहुत दुख हुआ। आखिर आपकी मां की स्तुति किसी भी भाषा में हो आखिर मेरी स्तुति आप नहीं जानते कितनी भाषाओं में होगी। आपको क्या बुरा लगना चाहिए? ये 'वन्दे मातरम' तो एक मंत्र है जिसको लेकर के ये देश स्वतंत्र हुआ। मेरे पिताजी झंडा लेकर के चले थे, उच्च न्यायालय में तो उनको गोली मार दी गई। खून बहता रहा पर फिर भी वो चल के ऊपर गए और झंडा फहराया। नारा लगाया 'वंदे मातरम'। हम सबके दिल दहल गए। इस तरह की चीज इस देश में हो रही है कि वंदे मातरम बंद कर दो। अरे ये देश क्या है तुम कुछ जानते ही नहीं। स्व का तंत्र जानते नहीं स्वतंत्र हो गए। इस तरह से हमारे अन्दर की जो गहन उदात्त भावना है उसे पाने वाले शिव हैं। जो हृदय में प्रेम है और जो सबके प्रति एक आत्मीयता है वो देने वाले शिव हैं। जो हमें ऐसी शक्ति देते हैं। हमारा प्रेम और हमारी आत्मीयता बड़ी आह्लाद दायिनी चीज है। जैसे वंदे मारतम कहते ही एक आह्लाद भर जाता है। वो शिव तत्व की देन है।

आज शिव जी की स्तुति गाते हुए आह्लाद आपमें आया। ये शक्ति शिव ने हमें दी है। इसलिए उन्हें आनन्ददायक कहते हैं। आनन्द में जो निरानंद है, सिर्फ आनन्द, उसमें अनेक तरह के आनन्द हैं। ये आह्लाद जो है ये हमारे भावनाओं से जुड़ा है। भावनाओं में उभरता है जैसे एक फूल से उसकी सुगन्ध मुखरित होती है उसी प्रकार हमारे हृदय में जो भावनाएँ है किसी चीज के प्रति अच्छी, उदार, प्रेममय, सुन्दर, ऐसी भावनाएँ हैं। शुद्ध भावनाएँ हैं। उस भावना की जो सुगन्ध है वो ही आह्लाद है। हम उसी आह्लाद में आन्नदमय होते हैं। और फिर किसी चीज की ज़रूरत नहीं रहती। इसको उभारने वाले, इसको जतन से रखने वाले और उचित समय पर इसका अनुभव लेने वाले ये शिवजी ही हैं क्योंकि वे स्पन्द के माध्यम से हमें देते हैं। अभी भी किसी बड़े साधु संत का नाम लो तो सारे बदन पे रोम खड़े हो जाते हैं। एकदम से ये स्पन्द, ये लहरियाँ दोनों बहना शुरू हो जाती हैं। अब ये बुद्धि वादियों को क्या समझाएं? ये तो आधे गधे हैं, और जो कुछ बचा वो घोड़े। इनके अन्दर तो आप कुछ घुसा ही नहीं सकते और घुसाओ भी मत। आप को चाहिए कि आप अपना ही जीवन इतना सुन्दर बनाओ कि ये पीछे रह जाएं और ये देखें कि ये समाज क्या है। अपने बुद्धि चातुर्य से इन्होंने कुछ लोगों को अपने अन्दर फँसा लिया। कितने लोगों को फँसाया, कितने झगड़े चलते रहते हैं। लेकिन आपका अगर समाज ऐसा बने जो आज बना हुआ है, आपस में हमारे कोई झगड़े नहीं ऊँच-नीच नहीं। किसी ने बताया कि दिल्ली में कोई सहयोगी मर गए। वो बहुत बीमार थे तो उनके क्रियाक्रम में कोई रिश्तेदार वगैरह नहीं आए। सब सहजयोगियों ने अपने तरफ से किया। एक चीज कहीं हो जाती है वहां तो दुनिया भर से लोग दौड़ने लगते हैं। कोई ये नहीं सोचता कि मेरा रिश्तेदार हैं। ये तो सब निर्व्याज्य प्रेम है कि ये सहजयोगी है और हम भी सहजयोगी है। एक दूसरे को मदद करने के लिए, एक दूसरों को सँवारने के लिए आपको जो मोड़ते हैं, खींचते हैं वो शिव तत्व हैं। चिंता लगी रहती है कि दो सहजयोगी ठीक रहें। ये जो चिंता है इसमें कोई लेन-देन की बात नहीं, इसमें कोई लाभ सोचा नहीं जाता पर एक ही तकलीफ है। ये जो नितांत, आपस की जो खींच है जो आत्मीयता है ये आप शिव तत्व से प्राप्त कर सकते है। ओर किसी भी तत्व से आप प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए मनुष्य को शिव तत्व में उतरना चाहिए।

आपने सुना होगा कि बोस्निया में दो सौ हजार लोग भूखे मर रहे हैं, मुसलमान हैं। और बड़ी तकलीफ की बात है कि खाने पीने को नहीं। बर्फ पिघला कर वो पानी पी रहे हैं। जब लोग मर जाते हैं तो उन्हीं का गोश्त खा रहे हैं। इतनी दुर्दशा में लोग हैं और किसी को उनके प्रति आत्मीयता नहीं। कोई लोग सोचते नहीं कि वो मर रहे हैं। मुसलमान देशों में इतना पैसा है, लेकिन कोई नहीं जाता उनको बचाने। जिस दिन संसार में शिव तत्व प्रस्थापित होगा ये सब ठीक हो जाएगा। ये झगड़े ही सब खत्म हो जाएंगे। कहते है कि 8-9 साल में ही ये सब घटित होना है। देखिए कितने लोगों की समझ सहज तक पहुंचती है? इतनी समझदारी लोगों में है कहाँ? आप लोगों पे निर्भर हैं कि आपके शिव तत्व के प्रकाश से दुनिया प्रभावित हो जाये और ये जो हमें आफतें दिखाई दे रही हैं, जो मनुष्य की ही मूर्खता से पैदा हुई हैं, पूरी तरह से नष्ट हो जाएं।

आज शिवजी से यही मांगना है कि ये शिव तत्व हमारे अंदर फिर स्थापित हो जाए। ये ही एक प्रार्थना शिवजी से करनी है कि शिव तत्व को आप हमारे अन्दर स्थापित कर दें। बहुत लोग पैसे कमा लेते हैं। बड़े-बड़े पदों पर चले जाते हैं बड़े-बड़े खिताब उन्हें मिलते हैं, सब कुछ होता है। ये तो मिलते ही रहते हैं। लेकिन आज की जो क्रान्ति है, आन्दोलन है, वो क्रान्ति मनुष्य के परिवर्तन की और सारे संसार को ठीक करने वाली है। उसके लिए कोई त्याग नहीं करने का कि मैंने ये त्याग किया मैंने वो त्याग किया। अपने आप छुट गए। जब सब कुछ छूट गया तब फिर परेशानी किसी चीज की? इस शिव तत्व में आप सब लोग उतरें ऐसा ही हमारा आशीर्वाद है।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

Mother, please come in my heart
Let me clear my heart so that You are there
Put Your Feet into my heart
Let Your Feet be worshipped in my heart
Let me not be in delusion
Take me away from illusions
Keep me in reality
Take away the sheer of superficiality
Let me enjoy Your Feet in my heart
Let me see Your Feet in my heart